अफ़कार

[पार्ट नं : 04]



1.हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ बहैसियते हुक्मरान

2.हमारे नबी आखिरी नबी

3.हुज़ूरे अकरम ﷺ की समाअत और बसारत

4. नामूसे रिसालत ﷺ

5. इल्म इंसान की एक गैबी आंख है

6. तलाक़ का सही मफहूम

7. जवानी की बरबादी

8. माहौल बदलें आदतें खुद बदल जायेंगी

9. कारोबार में हलाल और हराम

10. इल्मे दीन और ख्वातीन

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

Book name : Afkar Part 4

Language : Hindi

Author : Ulama e Ahle Sunnat

Hijri Date : 05 Ramadan 1442 H

English Date : 18 April 2021(Sunday)

Publisher : Tehreek Nizam e Mustafa (India) or TNM Official

Any Query, contact us : 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit: archive.org/details/@tehreek_nizam_e_mustafa_

Also follow us on: Facebook | Instagram | Youtube | Twitter

About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa ﷺ" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

TNM OFFICIAL

फहरिस्त ए मज़ामीन

TRANSLATED BY: MOHD SAQIB

इब्तिदा

कुब्बत ए फ़िक्र ओ अमल पहले फना होती है
फिर किसी क़ौम की शौक़त पर ज़वाल आता है

उम्मत ए मुस्लिमा के मौजूदा हालात किसी से पोशीदा नहीं हैं हुकूमत उनके पास नहीं इक़्तेदार उनका खत्म हो चूका लेकिन एक चीज़ इस उम्मत के पास बाक़ी थी जिसे फ़िक्र कहते हैं जिस फ़िक्र को लेकर ये उम्मत मेहनत मशक़्क़त करके अपने दुश्मन को खाक में मिला सकती थी लेकिन अब वो फ़िक्र ही इस क़ौम के दिलों से खत्म होती जा रही है और ये क़ौम गैरों की गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ चुकी है सब कुछ खत्म हो चूका है फिर भी हमारे हालात क्या हैं ? वही गुनाहों में लुथड़ी ज़िन्दगी

अरे ये तो वक़्त अल्लाह की बारगाह में रोकर गिड़गिड़ाकर माफ़ी मांगने का था के हम अल्लाह तआला से अर्ज़ गुज़ार होते के या अल्लाह हमें माफ़ फ़रमादे हमें दरगुज़र फ़रमादे हम अपने गुनाहों से तौबा करते हैं हमने तेरे अहकाम की पाबन्दी नहीं की इस लिए हम पर ये मुसीबतें आयी हुई हैं

ये तो वक़्त अपने प्यारे नबी ﷺ की बारगाह में रुजू करने का था और आप के सदक़े अल्लाह से दुआ करने का था लेकिन हम गफलत में मुब्तिला हैं हम वही कर रहे हैं जो हमारा नफ़्स हमसे कह रहा है

इस मैगज़ीन को पब्लिश करने का मक़सद सिर्फ और सिर्फ ये है के उम्मत ए मुस्लिमा की फ़िक्र को नयी ताज़गी दी जाये और जो बुराईयां और नफ़रतें हमारी क़ौम के दरमियान पनप रही हैं और बुज़दिली हमारी पहचान बन चुकी है इन सब को खत्म करने की कोशिश की जाये ये तभी हो सकता है के मुआशरे का हर इंसान बुराईयों को मिटाने के लिए जद्दोजिहद करे और इस को अपना एक अहम फ़रीज़ा समझ कर काम करे फिर वो दिन दूर नहीं जिस दिन हम अपने खोये हुए दिन वापस पा लेंगे ज़रूरत है क़ौम की फ़िक्र ओ अमल पर काम करने की

पढ़ने वालों से गुज़ारिश है के इस मैगज़ीन को पढ़ने तक ही महदूद न रखें बल्कि इस से सबक़ हासिल कर अपनी ज़िन्दगी में इस्लाम के मुताबिक़ अमल करने की ज़रूरत है इस मैगज़ीन को पब्लिश करने का मक़सद तभी हासिल हो सकता है जब इसको पढ़ने वाले अल्लाह की तौफ़ीक़ से इन तालीमात पर अमल करें अल्लाह हमारा हामी ओ मददगार हो

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ रदि अल्लाहु अनहु बहैसियत हुक्मरान

अल्लामा अब्दुल हकीम शरफ़ क़ादरी अलैह रहमा

نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم وعلی آلہ وأصحابہ أجمعین

हज़रत सदर गिरामी साथियों अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह वबराकातहु

मेरी गुफ्तगू का उनवान है " हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ रदि अल्लाहु तआला अन्हु बहैसियत हुक्मरान"।

अल्लाह तआला ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर को अपने हबीबे करीम ﷺ का अक्से जमील और मज़हरे अतम बनाया था। किसी उम्मती में बेहतर से बेहतर जो औसाफ़ पाए जा सकते हैं क़ुदरत ने आपकी फ़ितरत में वो तमाम वदियत फ़रमा दिए थे।

इब्ने असाकिर रावी हैं के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अच्छी सिफ़ात तीन सौ साठ हैं अल्लाह तआला जब किसी इन्सान की भलाई का इरादा फ़रमाता है , तो उसे उनमें से कोई एक सिफ़त अता फ़रमा देता है , जिसकी बदौलत उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाता है। हज़रत सिद्दीक़ ए अकबर ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह ﷺ मेरे अन्दर उनमें से कोई सिफ़त पाई जाती है?

फ़रमाया: अबु बकर! तुम्हें मुबारक हो तुम में वो सब सिफ़ात पाई जाती हैं।

(الصواعق المحرقة، ص74)

हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ में दीनी और दुनियावी क़यादत के तमाम औसाफ़ पाए जाते थे , इसलिए तमाम सहाबा ए इकराम ने बिलइत्तेफ़ाक़ आप को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया और हज़रत अली रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया नमाज़ इस्लाम का अज़ीम तरीन रुक्न है हुज़ूर ﷺ ने इसके लिए हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ को मुक़र्रर किया। हुज़ूर ﷺ ने जिसे हमारे दीन के लिए मुक़र्रर किया था हमने उसे अपनी दुनिया के लिए मुक़र्रर कर लिया।

(الصواعق المحرقة، ص 47)

जहांबानी के लिए जिन औसाफ़ का होना ज़रूरी है उनकी रौशनी में हज़रत सिद्दीक़ ए अकबर की शख़्सियत का जायज़ा लिया जाए तो यह तस्लीम करना पड़ेगा के आप बेमिसाल हुक्मरान थे। इस वक़्त मुख़्तसर तौर पर चन्द औसाफ़ का ज़िक्र करुंगा।

1) हाकिम के लिए ज़रूरी है के मुत्तक़ी और परहेज़गार हो हज़रत सिद्दीक़ ए अकबर के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है

"وَسَيُجَنَّبُهَا ٱلۡأَتۡقَى"

जहन्नम से दूर रखा जाएगा वो के बहुत ही मुत्तक़ी है मुफ़स्सेरीन का इत्तेफ़ाक़ है के यह आयत आप ही के बारे में नाज़िल हुई।

2) दूसरा ज़रूरी वस्फ़ यह है कि नबी ﷺ की सुन्नत पर चलने का कामिल जज़्बा पाया जाए। हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने जब हज़रत उसामा की क़यादत में एक लश्कर शाम की तरफ़ रवाना किया तो सहाबा ए इकराम ने अर्ज़ किया के इस वक़्त हर तरफ़ फ़ित्ना ए इरतिदाद फैला हुआ है , इसलिए लश्कर रवाना न किया जाए अपने फ़रमाया: कुछ भी हो जाए हुज़ूर ﷺ का भेजा हुआ लश्कर किसी सूरत वापिस नहीं होगा और जो झण्डा ख़ुद हुज़ूर ने बांध कर दिया था मैं उसकी गिरह नहीं खोल सकता।

(الصواعق المحرقة ص 17)

3) तीसरा वस्फ़ इस्तिक़ामत है, हुज़ूर ﷺ के विसाल के वक़्त सहाबा ए इकराम पर क़यामत गुज़र गयी किसी का दिल यह मानने के लिए तैयार न था कि हुज़ूर रिहलत फ़रमा गए हैं , यहां तक कि हज़रत उमर फारुक़ रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया जो शख़्स यह कहेगा के हुज़ूर विसाल फ़रमा गए हैं तो मैं उसका सर क़लम कर दूंगा। हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ ने सहाबा के मजमे को ख़िताब करते हुए फ़रमाया: जो हुज़ूर ﷺ की इबादत करता था वो जान ले के

हुज़ूर विसाल फ़रमा गए और जो अल्लाह तआला की इबादत करता था तो उसे यक़ीन रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ज़िन्दा है , उस पर कभी मौत तारी नहीं होगी। फिर यह आयत तिलावत फ़रमाई:

''وما محمد الا رسول قد خلت من قبله الرسل"

मुहम्मद अल्लाह तआला के रसूल ही तो हैं उनसे पहले रसूल वफ़ात पा गए।

यह सुनकर सहाबा को हुज़ूर के विसाल का यक़ीन हो गया और उन्हें यूं महसूस हुआ के हमने गोया यह आयत आज ही सुनी है।

(الصواعق المحرقة ص32)

4) चौथा वस्फ़ सियासत है यानी ऐसा निज़ाम क़ायम करना के अन्दरूनी और बैरूनी फ़ितनों का सफ़ाया हो जाए। हुज़ूर ﷺ के विसाल के बाद हर तरफ़ से इरतिदाद की ख़बरें आने लगीं , कोई ज़कात का इंकार कर रहा है , कोई ख़त्मे नबूवत का इंकार कर के ख़ुद नबी होने का दावा कर रहा है , कोई सिरे से दीने इस्लाम का इंकार कर रहा है, ऐसे आलम में इन तमाम फ़ितनों पर क़ाबू पाना और मुसलमा कज़्ज़ाब जो चालीस हज़ार अफ़राद के साथ यमामा में डेरा डाले हुए था उसका क़ला क़ुमा करना हज़रत सिद्दीक़ ए अकबर की शुजाअत व सियासत का बेमिसाल करिश्मा है।

सिर्फ़ यही नहीं बल्कि हज़रत सिद्दीक़ ए अकबर के हुक्म पर इस्लामी फ़ौजें उस वक़्त की सुपरपावर ताक़त रोमन एम्पायर से टकरा जाती हैं और शाम का अक्सर व बेशतर हिस्सा मुजाहिदीन के क़दमों तले रौंदा जाता है।

हज़रत सिद्दीक़ ए अकबर मुरतद्दीन का मुक़ाबला करने के लिए बनफ़्से नफ़ीस ऊंटनी पर सवार होकर निकलते हैं हज़रत अली मुर्तज़ा ऊंटनी की नकेल पकड़ कर कहते हैं:

ऐ ख़लीफ़ा ए रसूलुल्लाह मैं आपको वही बात कहता हूं जो उहद के दिन हुज़ूर ने आपको कही थी। अपनी तलवार मियान में डालो और हमें अपनी ज़ात के ग़म में न डालो। आप मदीना तय्यबा वापिस चलें। ख़ुदा की क़सम अगर आप को कुछ हो गया तो इस्लाम का निज़ाम कभी बहाल नहीं हो सकेगा।

(الصواعق المحرقة ص 17)

अल्लाह हमें ऐसा हुक्मरान अता फ़रमाए जो ख़ुल्फ़ाए राशेदीन के नक़्शे क़दम पर चलने वाला हो।

وآخر دعوانا ان الحمدللہ رب العالمین

हमारे नबी आख़री नबी ﷺ

मोहम्मद फ़ैज़ुल आरफीन रज़वी

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमारी हिदायत के लिए कमो वेश एक लाख चौबीस हज़ार अन्बिया ए इकराम अलैहिस्सलाम को मबऊस फ़रमाया। हर नबी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की अलैहदा अलैहदा सिफ़तों के मज़हर बनकर आए यहां तक के अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी सिफ़ात के साथ अपनी ज़ात का भी मज़हर बनाकर अपने महबूब नबी आख़िरुज़्ज़मा ﷺ को मबऊस फ़रमाया तो मज़हरे ज़ात के बाद अब किसी नबी की ज़रूरत न रही तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने नबुव्वत के दरवाज़े को अपने महबूब हुज़ूर नबी करीम ﷺ पर बन्द फ़रमा दिया अब नबी करीम ﷺ के बाद कोई नया नबी नहीं आएगा।

मुसलमानों के अक़ीदे के मुताबिक़ ख़त्मे नबुव्वत से मुराद यह है के हुज़ूर नबी करीम ﷺ अल्लाह के आख़री नबी और आख़री रसूल हैं। हालांकि हमारे नबी उस वक़्त भी मौजूद थे जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ख़मीर आबो गिल (मिट्टी और पानी) के दरमियान था। जैसा कि हज़ूर नबी करीम ﷺ ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया के

من كنت نبيا و آدم بين الماء والطين

यानी मैं उस वक़्त भी नबी था जिस वक़्त हज़रत आदम मिट्टी और पानी के दरमियान में थे

यानी उस वक़्त हज़रत आदम अलैहिस्सलातो वत तस्लीम का भी वजूद न था लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमारे नबी मुहम्मद ﷺ को सबसे आख़िर में हमारे दरमियान में भेजा और नबुव्वत व रिसालत का सिलसिला आप पर ख़त्म फ़रमा दिया अब हुज़ूर ﷺ के बाद कोई नबी मबऊस नहीं होगा। हुज़ूर नबी करीम ﷺ के आख़री नबी होने का ज़िक्र क़ुरआने पाक की सौ से ज़ायद आयाते क़ुरानिया में किया गया है। इरशाद ख़ुदावंदी है:

ماكان محمد ابا احد من رجالكم ولكن الرسول الله و خاتم النبيين

मोहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं लेकिन अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों के आख़िर में तशरीफ़ लाने वाले हैं और अल्लाह सब कुछ जानने वाला है।

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह अलेह फ़रमाते हैं इस आयत की तफ़सीर में के उनके बाद कोई नया नबी नहीं आएगा और मोहम्मद बिन हसन तूसी अपनी तफ़सीर तफ़सीरे तिबयान में कहते हैं आप आख़री नबी हैं अब क़यामत तक कोई नबी नहीं।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने हुज़ूर नबी करीम ﷺ को ख़ातिमुन्नबीईन [आखिरी नबी] कहकर यह ऐलान फ़रमा दिया के आप ﷺ ही आख़री नबी हैं के अब क़यामत तक न किसी को मनसबे नबुव्वत पर फ़ायज़ किया जाएगा और न ही मनसबे रिसालत पर। यह आयते मुबारका हुज़ूर नबी करीम ﷺ के आख़री होने पर नस्से क़तई है और इसका मायना पूरी तरह वाज़ह है जिसमें किसी तावील और तख़सीस की ज़र्रा बराबर भी गुंजाइश नहीं है।

ख़त्मे नबुव्वत से मुताल्लिक़ तफ़्सील यह है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर नबी करीम ﷺ को तमाम अन्बिया व मुरसलीन के आख़िर में मबऊस फ़रमाया और आप पर नबुव्वत व रिसालत का सिलसिला ख़त्म फ़रमा दिया गया आप के साथ या आपके बाद क़यामत होने तक किसी को नबुव्वत मिलना मुहाल है। यह अक़ीदा ज़रूरियाते दीन से है। इसका मुन्किर और इसमें अदना सा भी शक व शुबा करने वाला काफ़िर व मुरतद और मलऊन है।

कुरआने पाक में सौ से ज़ायद आयत ऐसी हैं जो इशारतन या किनायतन अक़ीदा ए ख़त्म नबुव्वत की तस्दीक़ व ताईद करती हैं ख़ुद नबी करीम ﷺ ने अपनी मुताद्दिद और मुतावातिर अहादीस में ख़ातिमुन्नबीयीन का यही मायना मुताय्यन फ़रमाया है। लिहाज़ा अब क़यामत तक किसी क़ौम या मुल्क या

किसी ज़माने के लिए आप ﷺ के बाद किसी और नबी की ज़रूरत बाक़ी नहीं और मशीयते इलाही ने नबुव्वत का दरवाज़ा हमेशा के लिए बन्द कर दिया।

हज़रत अनस बिन मालिक रदि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है के हुज़ूर नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

ان الرسالت والنبوت قد انقطت فلا رسول بعدی ولا نبی (ترمزی

तर्जुमा- अब नबुव्वत व रिसालत का इनकिता [खत्म होना] अमल में आ चुका लिहाज़ा मेरे बाद न कोई नबी आएगा और न कोई रसूल

इस हदीसे पाक से वाज़ह तौर पर मालूम हो गया के आप ﷺ के बाद अब कोई नया नबी नहीं आएगा और हुज़ूर नबी करीम ﷺ के बाद जो कोई भी नबुव्वत का दावा करे वो झूटा मलऊन और इब्लीस के नापाक अज़ायम का तर्जुमान होगा।

आप ﷺ ने नबुव्वत के झूठे दावेदारों की न सिर्फ़ निशानदेही की बल्कि उनकी तादाद भी बयान फ़रमा दी। हज़रत सोबान रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी है के हुज़ूर नबी ए अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

انہ سیکون فی امتی ثلثون کذابون کلھم یزعم انہ نبی وانا خاتم النبیین لا نبی بعدی (ترمزی

तर्जुमा: मेरी उम्मत में तीस अशख़ास[लोग] कज़्ज़ाब होंगे उनमें से हर कज़्ज़ाब को गुमान होगा के वो नबी है हालांकि मैं ख़ातिमुन्नबीयीन [आखिरी नबी] हूं और मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा।

और अगर कोई शख़्स हुज़ूर नबी करीम ﷺ के बाद नबुव्वत या रिसालत का दावा करे वो काफ़िर काज़िब[झूठा] और मुरतद और ख़ारिज अज़ इस्लाम है नेज़ जो शख़्स उसके कुफ़्र व इरतिदाद में शक करे और उसे मोमिन मुजतहिद और मुजद्दिद वगैरह माने वो भी काफ़िर व मुरतद और जहन्नमी है।

मुसलमानों का अक़ीदा है के जनाबे मोहम्मद ﷺ रूए ज़मीन की हर क़ौम और हर इन्सानी तब्क़े की तरफ़ रसूल बना कर भेजे गए हैं और आप की लाई हुई

किताब क़ुरआने मजीद तमाम आसमानी किताबों के अहकाम को मन्सूख़ करने वाली है और आइन्दा के लिए तमाम मुआमलात के अहकाम व क़वानीन में जामेअ व मानेअ है क़ुरआने करीम तकमीले दीन का ऐलान करता है गोया इन्सानियत अपनी मेराज को पहुंच चुकी है और क़ुरआने करीम इन्तहाई उरूज को पहुंचाने का ज़रिया है। इसके बाद न किसी नई किताब की ज़रूरत और न कोई नए नबी की हाजत। चुनान्चे उम्मते मुहम्मदिया का यह बुनियादी अक़ीदा है के आप के बाद अब कोई नया नबी नहीं आएगा।

क़ुरआन व सुन्नत की रौशनी में ख़त्मे नबुव्वत का इन्कार मुहाल है और यह ऐसा मुत्तफ़िक़ अलैह [यानी जिस पर तमाम मुसलमानों का इत्तेफाक हो] अक़ीदा है के ख़ुद अहदे रिसालत में मुसल्मा कज़्ज़ाब ने जब नबुव्वत का दावा किया और हुज़ूर की नबुव्वत की तस्दीक़ भी की तो उसके झूटा होने में ज़रा भी ताम्मुल न किया गया और सिद्दीक़ ए अकबर के अहदै ख़िलाफत में सहाबा ए इकराम ने जंग कर के उसे कैफ़रे किरदार तक पहुंचाया उसके बाद भी जब और जहां किसी ने नबुव्वत का दावा किया उम्मते मुस्लिमा ने उसे मुत्तफ़िक़ा तौर पर झूठा क़रार दिया और उसका क़ला क़ुमा करने में हर मुमकिन कोशिश की

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुआ है के हज़ूर की इज़्ज़त पर पहरा देने का जज़्बा अता फ़रमा और नामूस ए रिसालत का सच्चा पक्का मुहाफ़िज़ बना और नबुव्वत व रिसालत के झूठे दावेदारों का मुंह काला फ़रमा और उनको उनके अंजाम तक पहुंचा।

हुज़ूरे अकरम ﷺ की समाअत व बसारत

मोहम्मद साद जीलानी मरकज़ी

अल्लाह तबारक व तआला ने अपने आख़री पैग़म्बर जनाबे मोहम्मदुर रसूल अल्लाह ﷺ को बेशुमार फ़ज़ाइल और कमालात के साथ दुनिया में मबऊस फ़रमाया के जिस का कोई इहाता नहीं कर सकता आप ﷺ के फ़ज़ाइल व कमालात के बाज़ उन्वानात जैसे:

नबुव्वत, रिसालत, अल्लाह तबारक व तआला का दीदार , गुनाहगारों की शफ़ाअत, बुराक़, मेराज, सारी कायनात की तरफ़ बेसत, अंबिया के साथ इमाम बनकर नमाज़ पढ़ाना, बनी आदम की सरदारी, सारी कायनात के लिए रहमत होना, साहिबे किताब व हिकमत, उंगलियों के अन्दर से पानी के चश्मे बहा देना, चांद को शक़ करना, सूरज को वापस लौटाना, अब्र(बादल) का साया करना, कंकरियों का तस्बीह पढ़ना, रंजो अलम का दूर फ़रमाना और लोगों के शर से आपको महफ़ूज़ रखना वगैरह ऐसे कमालात हैं जिनका किसी से इहाता नहीं हो सकता। क्योंकि अल्लाह तआला के सिवा किसी में यह ताक़त नहीं है के कमालाते मुस्तफ़विया का इहाता कर सके।अक़्ल उनको समझने में बेअक़्ल है।

इस तरह आपकी समाअत व बसारत भी आम इन्सानों की तरह नहीं है आप एक जगह तशरीफ़ फ़रमा होकर ज़मीन , आसमान की बातों और चीज़ों को जान लेते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हम हुज़ूर अकरम ﷺ की बारगाह में हाज़िर थे के आप ने अचानक अपना सरे अनवर उठाया और फ़रमाया

وعليكم السلام ورحمة الله

आप से अर्ज़ किया गया या रसूल अल्लाह! आप ने किस को सलाम का जवाब इरशाद फ़रमाया है ? तो आपने फ़रमाया जाफ़र बिन तय्यार फ़रिश्तों की एक जमाअत के साथ ऊपर से गुज़रे हैं उन्होंने मुझे सलाम कहा तो मैंने उन्हें जवाब दिया है

(المستدرک ۲/۲۰۱

आप ही से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

قد رفع لي الدنيا فانا انظر اليها والي ما هو كائن فيها الي يوم القيامة كانما انظر الي كفي هذه

(زرقانی ۷/۲۰۴

अल्लाह तआला ने दुनिया को मेरे सामने उठा दिया है , बस मैं उसे और उसमें क़यामत तक होने वाले वाक़ियात को यूं देखता हूं जैसे मैं अपनी हथेली को देखता हूं। हज़रत सोबान रदि अल्लाहु अनहु बयान करते हैं रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

ان الله زوالي الارض فرأيت مشارقها و مغاربها

(مسلم ۲/۳۹۰)

बेशक अल्लाह तआला ने मेरे लिए ज़मीन को समेट दिया है तो मैं ने उसके मशारिक़ व मग़ारिब को देख लिया।

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रदि अल्लाहु अनहु से रिवायत है के आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: तुम्हारी मुलाक़ात का मक़ाम, हौज़ है और मैं उसे आज ही यहां अपने मक़ाम पर देख रहा हूं।

(مسلم ۲/۲۵۰)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

रसूल अल्लाह ﷺ रात की तारीकी में इसी तरह देखते थे जिस तरह सुबह के उजाले में देखते थे।

(خصائص کبریٰ ۱/۶۱)

रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

اني اري مالا ترون واسمع مالا تسمعون

(مشکوٰۃ ص ۴۵۷)

जो मैं देखता हूं वह तुम नहीं देखते जो मैं सुनता हूं वह तुम नहीं सुनते।

सहाबा किराम ने इन तमाम रिवायत को सुना और क़ुबूल किया , बल्कि आगे के मुसलमानों तक पहुंचा कर बता दिया के हमारा भी यही ईमान है।

एक मौक़े पर रसूल अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

هل ترون ما اریٰ فقالوا لا

(بخاری ۱/۵۰۸

क्या जो मैं देखता हूं वह तुम भी देखते हो, तो सहाबा इकराम ने अर्ज़ किया नहीं।

हज़रत हस्सान बिन साबित रदि अल्लाहु अनहु ने हुज़ूर अकरम ﷺ के सामने एक क़सीदा पेश किया, आपने उसे सुना, लेकिन उसके किसी जुज़ पर ऐतराज़ या इंकार न फ़रमाया , गोया वह क़सीदा आपका ताईद याफ़्ता है। इसका एक मिस्रा यह है।

نبی یریٰ مالا یریٰ الناس حوله

(المستدرک ۳/۱۰

नबी करीम ﷺ इर्द गिर्द वह कुछ देखते हैं जो आम लोग नही देखते।

उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदि अल्लाहु अन्हा ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया:

تری مالا اری

(بخاری ۱/ ۵۳۲)

या रसूल अल्लाह ﷺ जो आप देखते हैं वह मैं नहीं देखती।

उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं:

کان رسول اللہ ﷺ یری فی الظلماء کما یری فی اضوء

(الشفاء ۱/ ٦٨)

रसूल अल्लाह ﷺ अंधेरे में भी यूं देखते थे जैसे रौशनी में देखते थे।

हज़रत अबु अय्यूब अंसारी रदि अल्लाहु अनहु बयान करते हैं हम रात को नबी करीम ﷺ के साथ बाहर निकले तो आपने कुछ आवाज़ें सुनीं तो फ़रमाया यहूदियों को क़ब्रों में अज़ाब हो रहा है।

(بخاری ۱/ ۱۸٤،)

रसूले अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

لیس من عبد یصلی علی الا بلغنی حیث کان

(جلاء الافهام ص٦٣)

जब भी कोई आदमी मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता है तो वह कहीं भी हो उसकी आवाज़ मुझ तक पहुंच जाती है।

इस रिवायत को सुनने के बाद सहाबा ए इकराम ने वज़ाहत चाही के या रसूल अल्लाह ﷺ! क्या आपके विसाल के बाद भी? फ़रमाया.....हां।

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रदि अल्लाहु अनहु से मरवी है कि एक दिन हम बारगाहे रिसालत में बैठे थे आपने फ़रमाया:

هل تسمعون ما اسمع

.... क्या जो मैं सुन रहा हूं तुम सुन रहे हो? सहाबा किराम ने अर्ज़ की: या रसूल अल्लाह ﷺ हम तो कुछ नहीं सुन रहे। तो आप ने फ़रमाया:

اسمع اطیط السمآء

(مواہب الدنیہ/۹۰٤)

मैं आसमानों की आवाज़ें सुन रहा हूं।

हज़रत अबु हुरैरा रदि अल्लाहु अनहु बयान करते हैं हम हुज़ूर अकरम ﷺ की बारगाह में हाज़िर थे आपने एक आवाज़ सुनी तो फ़रमाया

اتدرون ماھذا؟

قال قلنا اللہ ورسولہ اعلم

क्या तुम जानते हो के यह क्या है? हम ने अर्ज़ किया अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते है, तो आपने फ़रमाया

ھذا حجر رمی بہ في النار منذ سبعین خریفا فھو یھوی في النار الآن حتی انتھی الی قعرھا

(مسلم ۳۸۱/۲

यह आवाज़ उस पत्थर की है जो आज से सत्तर साल पहले दोज़ख़ में फेंका गया था अब वह जहन्नम के नीचे तब्क़े में पहुंचा है।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रदि अल्लाहु अनहु बयान करते हैं, हम हुज़ूर अकरम ﷺ के साथ थे आप बनू नज्जार के बाग़ में थे के अचानक आपकी सवारी बिदकने लगी, क़रीब था कि आपको गिरा देती , और अचानक छः या पांच क़ब्रें देखीं ,

अपने फ़रमाया इन क़ब्र वालों को कौन जानता है ? एक आदमी ने अर्ज़ किया, मैं। आप ने फ़रमाया , यह कब मरे थे , उसने बताया, हालते शिर्क में , आप ने फ़रमाया बेशक यह उम्मत क़ब्रों में आज़माई जाएगी। अगर मुझे यह ख़दशा न होता के तुम मुर्दों को दफ़नाना छोड़ दोगे तो मैं अल्लाह की बारगाह में दुआ मांगता के वह अज़ाबे क़ब्र तुम्हें भी सुना देता जो मैं सुन रहा हूं।

(مشکوۃ ص۲۵)

इन तमाम रिवायात से वाज़ेह है कि जो चीज़ें आम लोग नही सुनते वह आप ﷺ सुन लेते हैं। आपकी समाअत व बसारत निहायत ही कमाल का दर्जा रखती है के जिसका कोई भी फ़र्द इहाता नहीं कर सकता।

अल्लाह तआला हम सब को सिरातुल मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, हुज़ूर अकरम ﷺ से सच्ची मोहब्बत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ سید المرسلین ﷺ

नामूस ए रिसालत ﷺ

मोहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

तमाम तारीफें उस परवरदिगारे आलम के लिए जिस ने तमाम कायनात को अदब के दायरे में पैदा फ़रमाया फिर हर मख़्लूक़ को अपने क़ानूने फ़ितरत के मुताबिक़ ख़ास निज़ामे अदब का पाबन्द बनाया और दुरूदो सलाम हो उसके हबीबे पाक, सरवरे आलम हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ पर जिन्होंने उम्मत को अदब का दर्स दिया जिसने इस दर्स पर अमल किया वो कामयाब हुआ और जिन्होंने ग़फ़लत इख़्तियार की वह ख़ायब व ख़ासिर हुआ।

एक ज़माना था कि अदबे रसूल ﷺ का जज़्बा, माँ, बाप, औलाद, और माल की मुहब्बत पर ग़ालिब था। हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ के एक इशारे पर सदहा वुजूद हरकत में आने लगते थे हुज़ूर ﷺ अगर लुआबे दहन गिराते तो वो किसी न किसी सहाबी के हाथ पर गिरता था। आप वुज़ू फ़रमाते तो उस पानी को लेने और मुंह पर मलने के लिए लोग हर तरफ़ से हाथ फैला देते आप का कोई तराशा हुआ नाखून या मूए मुबारक गिरता तो लोग अदब से उठाकर एहतियात से महफ़ूज़ रखते। यही वो ताक़त थी जो जिस्मे इस्लाम में रूह का काम कर रही थी और दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकतों रूमा व ईरान को भी पामाल करती चली गईं। आज मुसलमानों में जज़्बा ए इश्क़ ए रसूल ﷺ सर्द हो चुका है आज दुश्मनाने इस्लाम नामूस ए रिसालत ﷺ पर अपनी ज़बानें दराज़ करते हैं तो कोई इक्का दुक्का आशिके रसूल ही जान हथेली पर ले कर निकले तो निकले वरना पूरी उम्मत पर एक ग़फ़लत की नींद तारी है। यही वजह है के आज मुसलमान निहायत कमज़ोर हैं , ज़लील हैं, और तमाम अक़वाम से गिरे हुए हैं। इश्क़े रसूल ही मुसलमानों की रूह थी वो नापैद हो चुकी है लिहाज़ा हम ने फ़र्ज़ समझा के इस गुमराही के आलम में हक़ की आवाज़ बुलंद करें और लोगों को हुज़ूर की इज़्ज़त का मसअला बताया जाए जो मसअला तमाम मसायल से अव्वल व ज़रूरी है।

ताज़ीम ए रसूल ﷺ:

अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ की ताज़ीम को लाज़िम फ़रमाया है तुम्हारे रब्बे क़दीर का फ़रमान है

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا لِّتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا

(سورة الفتح، ٩٨)

बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर और ख़ुशी और डर सुनाता ताकि ऐ लोगों तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो।

तफ़सीरे क़ुर्तबी में इस आयत के तहत फ़रमाया:

وتعزروه] أي تعظموه وتفخموه؛ قاله حسن والكلبي

[تفسير القرطبي، الجزء التاسع عشر]

यानी تعزروه का मायना है "ऐ लोगों तुम अल्लाह के रसूल ﷺ की ताज़ीम करो" यह इमाम हसन बसरी और क़ल्बी का क़ौल है।

इस आयते मुबारका में अल्लाह तबारक व तआला ने मुसलमानों को हुज़ूर की ताज़ीम व तौक़ीर करने का दर्स दिया। इससे पता चलता है कि हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ की ताज़ीम मुसलमानों पर फ़र्ज़ है।

सहाबा का इश्क़ ए रसूल ﷺ:

बुखारी शरीफ़ में सुलह हुदैबिया के ताल्लुक से एक तवील हदीस मरवी है के हज़रत उरवा बिन मसऊद कुफ़्फारे क़ुरैश का नुमाइंदा बनकर हुज़ूर नबी ए

करीम ﷺ से मिलने आए तो आप ने सहाबा ए इकराम को हुज़ूर ﷺ की ऐसी ताज़ीम करते देखा कि जिसकी मिसाल नहीं मिलती, बुख़ारी के अल्फ़ाज़ हैं:

إِنَّ عُرْوَةَ جَعَلَ يَرْمُقُ أَصْحَابَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِعَيْنَيْهِ. قَالَ فَوَاللَّهِ مَا تَنَخَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم نُخَامَةً إِلاَّ وَقَعَتْ فِي كَفِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ فَدَلَكَ بِهَا وَجْهَهُ وَجِلْدَهُ، وَإِذَا أَمَرَهُمُ ابْتَدَرُوا أَمْرَهُ، وَإِذَا تَوَضَّأَ كَادُوا يَقْتَتِلُونَ عَلَى وَضُوئِهِ، وَإِذَا تَكَلَّمَ خَفَضُوا أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَهُ، وَمَا يُحِدُّونَ إِلَيْهِ النَّظَرَ تَعْظِيمًا لَهُ، فَرَجَعَ عُرْوَةُ إِلَى أَصْحَابِهِ، فَقَالَ أَىْ قَوْمِ، وَاللَّهِ لَقَدْ وَفَدْتُ عَلَى الْمُلُوكِ، وَوَفَدْتُ عَلَى قَيْصَرَ وَكِسْرَى وَالنَّجَاشِيِّ وَاللَّهِ إِنْ رَأَيْتُ مَلِكًا قَطُّ، يُعَظِّمُهُ أَصْحَابُهُ مَا يُعَظِّمُ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ صلى الله عليه وسلم مُحَمَّدًا

(صحيح البخاري، كتاب الشروط، باب الشُّرُوطِ فِي الْجِهَادِ وَالْمُصَالَحَةِ مَعَ أَهْلِ الْحَرْبِ وَكِتَابَةِ الشُّرُوطِ 2731)

हज़रत उरवा (दौरान ए गुफ्तगू) नबी ए करीम ﷺ के असहाब को देख रहे थे फिर रावी ने कहा , अल्लाह की कसम जब भी रसूल अल्लाह ﷺ लुआबे दहन गिराते वो किसी न किसी सहाबी की हथेली में आ जाता वो उसको अपने चेहरे और बदन पर मलते थे (अल्लाहु अकबर यह होती है असल मुहब्बत) और जब आप कोई हुक्म फ़रमाते तो वो सब उसकी तामील में एक दूसरे से सबक़त ले जाने की कोशिश करते और जब आप वुज़ू फ़रमाते तो वह आप के वुज़ू के बचे हुए पानी को लेने के लिए इस तरह झपटते थे गोया एक दूसरे को क़त्ल कर देंगे और जब आप बात करते वो सब आपके सामने अपनी आवाज़ों को पस्त कर देते और वो आप की ताज़ीम की वजह से आप को नज़र भर नहीं देखते थे।

फिर हज़रत उरवा अपनी क़ौम की तरफ़ वापस लौटे और कहा ऐ लोगों! अल्लाह की कसम मैं बादशाहों के पास गया हूं और मैं क़ैसरो किसरा और नज्जाशी के पास गया हूं और अल्लाह की कसम मैंने हरगिज़ नहीं देखा के किसी बादशाह की उसके लोग इतनी ताज़ीम करते हों जितनी ताज़ीम सय्यदुना मुहम्मद ﷺ के असहाब सय्यदुना मुहम्मद ﷺ की करते हैं।

गुस्ताख़ी किसे कहते हैं:

अवाम बल्कि बहुत बड़े समझदार लोग समझते हैं के गुस्ताख़ी शायद गाली देने या किसी को ऐब लगाने या उसकी तहक़ीर व तौहीन के अल्फ़ाज़ ही का नाम है नहीं नहीं बल्कि गुस्ताख़ी की एक क़िस्म और भी है के अल्लाह तआला , मलायका, अम्बिया ए इकराम, और बिल्ख़ुसूस हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ के लिए ऐसे कलिमात बोलना जो उनकी शान के लायक़ न हों या आप की निस्बते अक़दस को किसी हक़ीर व क़बीह चीज़ से तश्बीह देना भी गुस्ताख़ी है और यह अवाम बल्कि बहुत से ख़ुद को उल्मा कहलवाने वाले भी कह गुज़रते हैं फिर उन्हें इस पर आगाह किया जाए तो तवीलें गढ़ने लगते हैं।

क़ुरआने मजीद से इसकी एक मिसाल पेश की जाती है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ

(سورة البقرة؛ 104)

ऐ ईमान वालों रायना न कहो और यूं अर्ज़ करो के हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

तफ़सीर दुर्रे मनसूर में इस आयत के तहत फ़रमाया:

عن ابن عباس في قوله : "لا تقولوا راعنا" : وذلك أنها سبة بلغة اليهود ، فقال تعالى : "وقولوا أنظرنا" . يريد : "اسمعنا. فقال المؤمنون بعدها : من سمعتموه يقولها فاضربوا عنقه فانتهت اليهود بعد ذلك

(الدر المنثور ، الجزء الاول)

हज़रत इब्ने अब्बास इस आयत के तहत फ़रमाते हैं के यह लफ़्ज़ रायना यहूद की ज़बान में गाली था अल्लाह तआला ने ईमान वालों से फ़रमाया तुम कहो हम पर नज़र फ़रमायें इस आयत के नज़ूल के बाद मुसलमान कहते थे के जिस को तुम यह लफ़्ज़ (रायना) इस्तेमाल करते हुए सुनो उसकी गर्दन उड़ा दो तो यहूद उसके बाद इस लफ़्ज़ के इस्तेमाल से रुक गए।

साबित हुआ जिस लफ़्ज़ में दो पहलू निकलते हो एक अच्छा और एक बुरा तो उसे भी इस्तेमाल करना जायज़ नहीं क्योंकि सहाबा ए इकराम लफ़्ज़ रायना रिआयत के मायने में लेते थे के या रसूल अल्लाह ﷺ हमारी रिआयत फ़रमाइए लेकिन यहूदी इस लफ़्ज़ को गुस्ताख़ी की नियत से कहते थे। अल्लाह तआला ने क़यामत तक के लिए इस लफ़्ज़ के इस्तेमाल पर रोक लगा दी और फ़रमाया अब तुम लोग " انظرنا" कहो और आगे फ़रमाया के काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

गुस्ताख़े रसूल की सज़ा:

क़ुरआने करीम का इस बारे में वाज़ेह फ़रमान है-

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا

(سورۃ الأحزاب؛ 57)

बेशक जो ईज़ा [तकलीफ] देते हैं अल्लाह और उसके रसूल को उन पर अल्लाह की लानत है दुनिया और आख़िरत में और अल्लाह ने उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।

बुखारी और मुस्लिम में हज़रत अनस बिन मालिक रदि अल्लाहु अनहु से मरवी है

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ۔ رضی اللہ عنه۔ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ، وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ، فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ، فَقَالَ إِنَّ ابْنَ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ. فَقَالَ "اقْتُلُوهُ".

(صحيح البخاري، كتاب جزاء الصيد، 1846)

के फ़तहे मक्का के साल जब हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ शहर मक्का में दाख़िल हुए आप के सर पर लोहे का ख़ौद था जब आपने उसे उतारा तो किसी शख़्स ने

अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह ﷺ (आपकी शान में तौहीन करने वाला) इब्ने ख़तल काबे के पर्दों में छुपा हुआ है आप ने फ़रमाया उसको क़त्ल कर दो।

इमाम हज्र अस्क़लानी इस हदीस के तहत लिखते हैं:

فأخذ عبد الله بن خطل من تحت أستار الكعبة فقتل بين المقام و زمزم

यानी इब्ने ख़तल को काबे के पर्दों से निकाल कर मक़ामे इब्राहिम और बेरे ज़मज़म [ज़मज़म का कुआं] के दरमियान क़त्ल कर दिया गया।

(فتح الباري)

इमाम नववी इस हदीस के तहत लिखते हैं:

قال علماء ؛ إنما قتله لأنه قد كان ارتد عن الإسلام و كان يهجو النبي صلى الله عليه وسلم و يسبه

(شرح النووى على المسلم)

के उल्मा ने फ़रमाया उसे इसलिए क़त्ल किया गया क्योंकि वह मुरतद हो गया था और वो हुज़ूर नबी करीम ﷺ की शान में गुस्ताख़ियां करता था।

नोट: इस से मालूम हुआ के गुस्ताख़े रसूल अगर चे काबे के पर्दों में छुपा हुआ हो उसे भी क़त्ल कर दिया जाए।

इमाम इब्ने आबदीन शामी हनफ़ी अपने रिसाला

"تنبيه الولاة والحكام على أحكام شاتم خير الأنام أو أحد أصحابه الكرام"

में लिखते हैं:

قال محمد بن سحنون: أجمع العلماء على أن شاتم النبي والمنتقص له كافر، والوعيد جار عليه بعذاب الله تعالى له، وحكمه عند الأمة القتل، ومن شك في كفره وعذابه كفر.

(صفحه٤٤)

मुहम्मद सहनून फ़रमाते हैं उल्माए उम्मत का आजमा है के नबी ए करीम ﷺ को गाली देने वाला और आप की तौहीन करने वाला काफ़िर है और इस के लिए अल्लाह तआला की बईद जारी है और उम्मत के नज़दीक उसका हुक्म क़त्ल है जो उसके कुफ़्र और अज़ाब में शक करे वो भी काफ़िर है।

क़ारेईने इकराम! हमने यहां कुरआन व हदीस से यह साबित किया के हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ की ताज़ीम हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है और जो कोई आप ﷺ की शान में ज़र्रा बराबर भी तौहीन करे वो काफ़िर है और मुस्तहिक़े क़त्ल है और जो उसके कुफ़्र में शक करे वो भी काफ़िर है।

अल्लाह तआला से दुआ है के हमें हुज़ूर नबी ए करीम ﷺ से सही मायनों में मोहब्बत करने वाला बना दे। और हमें नामूस ए रिसालत ﷺ का पहरे दार बना दे। इस शेर के साथ मैं अपनी बात को ख़त्म करता हूं

उन्हें जाना उन्हें माना न रखा ग़ैर से काम

लिल्लाहिल हम्द में दुनिया से मुसलमान गया।

अल्लाह हमारा हामी व नासिर हो।

इल्म इन्सान की एक ग़ैबी आंख है

आमिर हमीद मरकज़ी

इल्म की अहमियत व ज़रूरत मुसल्लम है, हर कसो नाकिस उसकी अज़मत व इफ़ादियत से बख़ूबी वाक़िफ है। इल्म के हुसूल की फ़ज़ीलत किसी मज़हब , किसी दीन या किसी क़बीले के साथ ख़ास नहीं बल्कि हर इन्सान बहैसियते इन्सान उसकी अहमियत का मोतरिफ़ है। वो इसलिए के ख़ालिके कायनात ने जब हज़रते इन्सान की बसूरत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम इस दुनिया में तख़लीक़ फ़रमाए तो उसने हज़रत आदम को तमाम मख़लूक़ात ग़र्ज़ यह के तमाम जिन्नात व मलायका पर फ़ौक़ियत दी और वजह तरजीह कोई और शय नहीं बल्कि अल्लाह ने इल्म ही को वजह तरजीह बनाया जिस की ताईद व तस्दीक में फ़रिश्तों ने अपना सर तस्लीमे ख़म कर दिया और एतेराफ़ व अज़मत किए बग़ैर न रह सके।

अगर हम इल्म के हुसूल की इफ़ादियत पर ग़ौर करें तो हमें पता चलेगा के इल्म किस क़द्र ज़रूरी है। इल्म वो नूर है जो आम इन्सान को मुअज़्ज़ज़ बना देता है अगर ग़ुलाम में पैदा हो जाए तो उसको सरबुलन्दी मिल जाती है और बादशाह में आ जाए तो उसके दरजात बुलन्द हो जाते हैं। इल्म इन्सान की ग़ैबी आंख है जिस के ज़रिए वो बहुत कुछ देख लेता है , इल्म वो ख़ुशबू है कि जितना खिलता है उतना ही ख़ुशबू देता है। इल्म ही इन्सान की शख़्सियत को मज़बूत बनाता है। इल्म इन्सान को दीनो मिल्लत और मुआशरे में एक बावक़ार ज़िन्दगी का हामिल बनाता है। इल्म ही इन्सान को मोहज़्ज़ब व मोअद्दब और सलीक़ा मन्द बनाता है। हज़रत अली करमुल्लाह वजहुलकरीम ने इरशाद फ़रमाया कि इल्म दौलत से बेहतर है , दीन ख़ज़ाना है और इल्म उसका रास्ता , दौलत ख़र्च करने से कम होती है और इल्म बढ़ता है। तुम दौलत की हिफ़ाज़त करते हो और इल्म तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है।

वो इल्म ही है जिसके तवस्सुत से इन्सान इन्सानियत सीखता है , बड़ों की इज़्ज़त और छोटों पर शफ़क़त सीखता है। वो इल्म ही है जो अख़ुव्वत व भाईचारगी सिखाता है। हज़रत मौलाना रूम ने फ़रमाया था अगर मेरा इल्म मुझे इन्सान से मोहब्बत करना नहीं सिखाता तो एक जाहिल मुझसे हज़ार दर्जा बेहतर है।

इल्म कैसे हासिल होता है:
अल्लाह तआला ने इन्सान के अंदर फ़ितरी तौर पर हिरस व तमा की दौलत पैदा फ़रमाई है तो इन्सान जिसकी तलब में हरीस हो जाता है यक़ीनन उसको हासिल कर ही लेता है। अगर चे हिरस व तमा के मनफ़ी पहलू भी ज़ाहिर हैं लेकिन उसका इस्तेमाल मुस्बत अंदाज़ में किया जाए तो भलाई हाथ आएगी। हज़रत शेख़ सादी शीराज़ी फ़रमाते हैं के दो हरीस कभी आसूदा नहीं होते एक माल का हरीस दूसरा इल्म का हरीस , मालूम हुआ के इल्म की तलब में हिरस अच्छी चीज़ है। इल्म जहां पढ़ कर ,सुन कर और देखकर हासिल होता है वहीं उसका सबसे ज़्यादा ताल्लुक़ मुतअल्लिम के ज़ौक व शौक पर भी है जिस क़दर प्यास बढ़ती जाएगी सैराबी मिलती जाएगी। किसी दानिश मन्द ने कहा था के इल्म निगाह से मिलता है किताब से नहीं इल्म का मख़रज निगाह है और उसका मदफ़न किताब है यह बस तालिब ए इल्म की दिलचस्पी और लगन पर मुनहसिर है।
वु अली सीना जैसे अज़ीम मन्तिक़ी व फ़ल्सफ़ी से हर साहिबे ख़िर्द वाक़िफ़ है जिसे मन्तिक़ का मुअल्लिमे अव्वल क़रार दिया गया है जब उसने बीमार बादशाह का कामयाब इलाज कर दिया तो बादशाह ने ख़ुश हो कर उससे कहा ऐ मेरे तबीब तूने मुझे नयी ज़िन्दगी दी है मैं आज बहुत ख़ुश हूं मांगो! तुम्हें मुंह मांगा इनाम दिया जाएगा। क़ारेयीन इकराम! ग़ौर फ़रमाएं बु अली सीना के सामने बादशाह की तरफ़ से कितनी बड़ी पेशकश थी।
अगर वह चाहता तो बादशाह की जायदाद में शिरकत का मुताल्बा करता या उसकी शहज़ादी से निकाह की मांग करता मगर उसकी फ़िक्र की बुलन्दी और तलबे इल्म की चाह देखिए ; बु अली सीना ने कहा बादशाह सलामत अपनी शाही लाइब्रेरी में मुझे किताबों के मुताले की इजाज़त दे दीजिए। आज बेशुमार लाइब्रेरियां और कुतुब ख़ाने मौजूद हैं अगर हम चाहें तो सैर कुतुब कर सकते हैं मगर वक़्त की क़द्र ओ कीमत यक लख़्त नज़र करके फ़िज़ूल बातों और कामों में अपने वक़्त को गुज़ार देते हैं और अपने हाथ से कामयाब होने के मवाक़ेअ गंवा देते हैं इस पर तवज्जो देने की ज़रूरत है।

इल्म किस से हासिल किया जाए:

यह एक आफ़ाक़ी हक़ीक़त है के हुसूले इल्म , दर्स व मुशाहिदा समेत कई ख़ारजी ज़राय से ही मुमकिन होता है उनमें मरकज़ी हैसियत उस्ताद और मुअल्लिम ही की है जिस के बग़ैर सेहतमंदी ए मुआशरा की तशकील नामुमकिन है। मुअल्लिम ही वह अहम शख़्सियत है जो तालीम व तरबियत का महवर, ममबा व मरकज़ होता है। तरक़्क़ी याफ़्ता कौमों और मोहज़्ज़ब मुआशरों में उस्ताद को एक ख़ास मक़ाम व मर्तबा और नुमायां हैसियत हासिल होती है। क्योंकि मुहज़्ज़ब , तवाना, पुरअमन और बाशऊर मुआशरे का क़याम उस्ताद ही पर मरहूने मिन्नत है।
इस्लाम ने दुनिया को इल्म की रोशनी अता की , उस्ताद को अज़मत और तालिबे इल्म को आला व अरफ़ा मक़ाम अता किया है। नबी करीम ﷺ ने अपने मक़ाम व मर्तबे को इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया के मुझे मुअल्लिम बना कर भेजा गया है।

(ابن ماجه)

इस्लाम ने उस्ताद को रूहानी वालिद क़रार दे कर एक क़ाबिले क़द्र हस्ती और मोहतरम व मोअज़्ज़म शख़्सियत की हैसियत अता की। मुअल्लिम के किरदार की अज़मत व अहमियत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है के इस आलमे रंगो बू में मुअल्लिमे अव्वल ख़ुद रब्बे क़ायनात है। चुनान्चे क़ुरआने पाक में इरशाद है के "आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह करीम ने सब चीज़ों के असमा का इल्म अता किया"।

(البقره)

इन्सान की तख़लीक़ के साथ साथ तालीम का भी इन्तेज़ाम फ़रमाया। रहमान ही ने क़ुरआन की तालीम दी , उसने इन्सान को पैदा किया उसको गोयाई सिखाई।

(الرحمن)

ज़रिया ए तालीम क़लम को बनाया। पढ़ और तेरा रब बड़ा करीम है जिसने क़लम से सिखाया और आदमी को वो सिखाया जो वो नहीं जानता था।

(العلق)

मुअल्लिमे कायनात ने इन्सानियत की रहनुमाई और तालीम के लिए कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया ए इकराम को मुअल्लिम व मुरब्बी बना कर भेजा। हर नबी शरियत का मुअल्लिम होने के साथ साथ किसी एक फन का माहिर और मुअल्लिम भी होता था जैसे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम दुनिया में ज़राअत व सनअत व हुरफ़त के मुअल्लिमे अव्वल थे। कलाम को ज़ब्ते तहरीर में लाने का इल्म सब से पहले हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने ईजाद किया, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने लकड़ी से चीज़ें बनाने का इल्म मुतार्रफ़ करवाया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इल्मे मुनाज़रह और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने इल्मे ताबीरु रुय्या [ख्वाब की ताबीर] की बुनियाद डाली। ख़ातिमुल अम्बिया हुज़ूर ﷺ ने मुअल्लिम को इन्सानों में बेहतरीन शख़्सियत क़रार देते हुए इरशाद फ़रमाया तुम में से बेहतर शख़्स वो है जो क़ुरआन सीखे और सिखाए।

(بخاری)

इरशादे गिरामी रसूल ﷺ है के तुम्हारे दुनिया में तीन बाप हैं , एक वो जो तुम्हें अदम से वजूद में ले कर आया , एक वो जिसने तुम्हें अपनी बेटी दी और तीसरा वो जिसने तुम्हें इल्म सिखाया।
हज़रत अली ने फ़रमाया के जिस शख़्स ने तुम्हें एक लफ्ज़ भी सिखा दिया वो तुम्हारा उस्ताद है। वालिदैन अपनी औलाद को अदम से वजूद में ले कर आते हैं मगर जब बच्चे को दर्सगाह में भेजते हैं तो उस्ताद ही होता है उसके हाथ में क़लम थमा के सबसे पहले उसे क़लम पकड़ना सिखाता है।

मुअल्लिम की ताज़ीम इल्म की ताज़ीम है:

इन्सान जिस से भी कुछ सीखे उसका एहतराम फ़र्ज़ है। अगर सीखने वाला , सिखाने वाले का एहतराम नहीं करता तो वह इल्म हिफ़्ज़ बे मारफ़त गुफ़तार है, उसमें आमाल का हुस्न नहीं, गोया वह इल्म जो अमल से बेगाना हो वो एक बे मायना लफ़्ज़ है। इल्म किसी भी नौयत का हो उस का अता करने वाला बहरहाल क़ाबिले इज़्ज़त है और जब तक अदब व एहतराम का जज़्बा दिल की गहराइयों से नहीं होगा तब तक न इल्म का गुलज़ार महक सकेगा और न ही इल्म तालिबे इल्म के क़ल्बो नज़र को नूरानी बना सकेगा। बाक़ी तमाम चीज़ें इन्सान ख़ुद बनाता है मगर इन्सान को कौन बनाता है ? मेरी मुराद इन्सान की

तख़लीक़ नहीं बल्कि इन्सान का बशरियत से आदमियत की तरफ़ सफ़र है। इन्सान को बेहतर और अच्छा इंसान बनाने वाले फ़नकार का नाम मुअल्लिम है। इसीलिए उसका काम दुनिया के तमाम कामों से ज़्यादा मुश्किल, अहम और क़ाबिले क़द्र है। उस्ताद और शागिर्द का रिश्ता रूहानी रिश्ता है यह ताल्लुक़ दिल के गिर्द घूमता है और दिल की दुनिया मोहब्बत व इरादत की कहकशां से बिखरती है।

अदब पहला क़रीना है मोहब्बत के क़रीनों में

रसूले पाक ﷺ ने ख़ुद को मोअल्लिम कहा। आप के शागिर्द यानी आपके असहाब आप का कितना एहतराम करते थे। दुनिया की तारीख़ ऐसी नज़ीर पेश करने से क़ासिर है। दोस्तो! एहतरामे उस्ताद एक अज़ीम जज़्बा है।

इरशादे गिरामी ए रसूल अल्लाह ﷺ है के एक उस्ताद की हैसियत रूहानी बाप की सी है। उसका हक़ अपने शागिर्दों पर उतना ही है जितना बाप का औलाद पर।

हर अज़ीम इन्सान के दिल में अपने असातिज़ा के एहतराम के लिए बेपनाह जज़्बात होते हैं यही उसकी अज़्मत की दलील है। हमारे सामने यूं तो बेशुमार मिसालें इस सिलसिले में मौजूद हैं लेकिन यहां सिर्फ सिकन्दरे आज़म की मिसाल पेश करूंगा। सिकन्दर उस्ताद का बेहद एहतराम करता था। किसी ने उससे इसकी वजह पूछी तो सिकन्दर ने जवाब दिया-
मेरा बाप मुझे आसमान से ज़मीन पर लाया। जब के मेरा उस्ताद अरस्तू मुझे ज़मीन से आसमान पर ले गया। मेरा बाप बायसे हयाते फ़ानी है और उस्ताद मूजिबे हयाते जाविदां। मेरा बाप मेरे जिस्म की परवरिश करता है और उस्ताद मेरी रूह की।
मोहतरम क़ारेईन! इल्म और तालिबे इल्म के माबैन ताल्लुक़ चूंके एक रूहानी होता है इसी वजह से मोअल्लिम और मुताअल्लिम के दरमियान रिश्ता ए इल्म को रूहानी पिदर व पिसर का नाम दिया जाता है।

मोअल्लिम एक बवक़ार शख़्स होता है और वह अपने तालिबे इल्म के लिए रहनुमा भी। इसलिए मोअल्लिम को अपने किरदार को साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ रखना निहायत ज़रूरी होता है। मोअल्लिम बएक वक़्त नफ़्सियाती , अख़्लाक़ियाती, और रूहानी सलाहियत रखता है। जिसे तालिबे इल्म देखकर अपने अन्दर ऐसी तब्दीली लाने की कोशिश करता है। मोअल्लिम की हमा जहत शख़्सियत और मुअस्सिर कारकरदगी के लिए बाज़ अहम अक़दार व सलाहियतों की ज़रूरत होती है।

अमली किरदार:

तल्बा अपने उस्ताद को बहुत बारीक बीनी से देखते हैं यूं उस्ताद की चाल ढाल , आदात व अतवार और अख़लाक़ व किरदार का लशऊरी तौर पर असर क़ुबूल करने लगते हैं। दूसरे लफ़्ज़ों में तालिबे इल्म मोअल्लिम का अक्स होता है। इसलिए मोअल्लिम को अपना किरदार साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ रखना चाहिए।

इख़्लास:

अच्छा मोअल्लिम अपने पेशे के साथ मुख़लिस होता है। इख़्लास वो जौहर है जिससे अमल में लज़्ज़त पैदा हो जाती है। अपने पेशे से मोअल्लिम को जिस क़दर दिलचस्पी होगी उसकी राह में हायल रुकावट कम होती चली जाएंगी।

मुताले का शौक़:

वुसअते मुताला की वजह से मोअल्लिम अपने मज़मून पर उबूर हासिल कर सकता है। जिस मोअल्लिम को मज़मून पर उबूर नहीं होगा तब आम तालिबे इल्म भी मोअल्लिम की कमज़ोरी को भांप लेगा इसलिए मोअल्लिम का मुताला जितना वसीअ होगा उसके इल्म में भी उतना ही इज़ाफ़ा होगा। और नई मालूमात वो तल्बा को फ़राहम कर सकेगा। और ज़ाती सलाहियत में इज़ाफ़ा भी होगा। तल्बा भी ऐसे मोअल्लिम से रग़बत बढ़ाने और अपने मसाइल का हल तलाश करने में उसको तरजीह देते हैं।

ज़िम्मेदारी का एहसास:

एक कामयाब मुअल्लिम के लिए ज़रूरी है के वह ज़िम्मेदार हो क्योंकि तल्बा की ज़िम्मेदारी का अंदाज़ा ज़िम्मेदार मोअल्लिम की शनाख़्त है।

शुक्र:

शुक्र की तीन किस्में हैं। क़ल्बी , लिसानी, और अमली। क़ल्बी शुक्र का मतलब दिल में मुनइम (मोहसिन) का एहतराम और उससे मोहब्बत हो। जिस इदारे से मुन्सलिक है वहां के मुन्तज़िमीन का क़ल्बी शुक्र बेहद ज़रूरी होता है। जो मोअल्लिम अपने तल्बा के सामने अपने मुंतज़िमीन की बुराइयां करता हो और उस पर तन्क़ीद करता है वह कामयाब मुअल्लिम नहीं होता। लिसानी शुक्र दो तरीकों का होता है। एक अपने रब की नेमतों को बयान करे। दूसरा यह के अपने मोहसिन का शुक्र ज़बान से अदा करे। जिसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया:
"मेरा शुक्र अदा करो और अपने वालिदैन का भी"
नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: जिस ने लोगों का शुक्र अदा नहीं किया उसने अल्लाह का शुक्र अदा नहीं किया। अमली शुक्र से मुराद अल्लाह की अता की गई नेमतों को ढंग से इस्तेमाल करना है।

अच्छी सोहबत:

मोअल्लिम को चाहिए के अच्छे लोगों की सोहबत इख़्तियार करे ताकि उसके पास से गुज़रने वाला तालिबे इल्म उसके अख़लाक़ की ख़ुशबू से मोअत्तर हो मोअल्लिम की शनाख़्त उसके सोहबत के लोगों से होती है बुरे लोगों से ख़ैर ख़्वाही और इस्लाह का ताल्लुक तो रखें पर दोस्ती का नहीं।

सब्र और बर्दाश्त:

तालीम के मैदान में सब्र , तहम्मुल की बड़ी अहमियत है। जिस मोअल्लिम में यह सिफ़त जिस क़दर होगी वह तल्बा को उसी क़दर सही तौर पर समझ सकेगा और उसे सही तालीम दे सकेगा। जिस क़दर मोअल्लिम में यह ख़ूबी होगी वह उतना ही कामयाब मोअल्लिम होगा।

ज़ुहद व तक़वा:
एक कामयाब मुअल्लिम में ज़ुहद व तक़वा का होना बेहद ज़रूरी है। जिस मुअल्लिम की शागिर्द के माल पर नज़र रहती हो ऐसे मुअल्लिम की इज़्ज़त शागिर्द की नज़र में कौड़ी की भी नहीं होती।

अमानतदारी:
अच्छा पेशावर वो होता है जिसमें अमानत का वस्फ़ बख़ूबी मौजूद हो। मुअल्लिम की अमानत का दारोमदार इस बात पर है के वह अपने इल्म को आगे मुन्तक़िल करने में सख़ी रहे। इल्म बांटने से बढ़ता है इस बात का बख़ूबी ख़्याल रखे।

अख़लाक़ी किरदार:
एक अच्छा मुअल्लिम अपने अन्दर अच्छे अख़लाक़ रखता है। उसके अन्दर जितनी भी बुरी बातें और आदतें हैं उन सब से जब तक पीछा छुड़ा नहीं लेता उसमें अच्छे अख़लाक़ का फ़ुक़्दान मौजूद नहीं रहेगा।

क़ौल व फ़ेल में मुताबिक़त:
जिस मुअल्लिम के क़ौल और फ़ेल में तज़ाद हो वो कभी कामयाब नहीं होता बल्कि एक बदनाम और नाकाम मुअल्लिम बनकर रह जाता है।

दरगुज़र करना:
तल्बा को ऐसा मुअल्लिम कभी भी पसन्द नहीं होता जो उसकी हर छोटी बात को पकड़े रखे। दरगुज़र करना एक कामयाब मुअल्लिम की सिफ़त होती है और ऐसा मुअल्लिम ही दरासल कामयाब होता है।

ग़ुस्सा कम करें:
मुअल्लिम को चाहिए कि अपने गुस्से पर क़ाबू रखे। ज़्यादा गुस्सा करने वाला मुअल्लिम तल्बा के लिए नापसंदीदा होता है और तल्बा ऐसे मुअल्लिम से

तालीम हासिल नहीं करते बल्कि डर की वजह से उस मुअल्लिम से दूर रहना पसंद करते हैं।

नक़ल नवीसी से तल्बा को दूर रखें:

इम्तिहान के दौर में कुछ मुअल्लेमीन अपने मज़मून में ज़्यादा से ज़्यादा तल्बा को कामयाब करवाने के लिए नक़ल भी करवाते हैं इस से तल्बा की सही मेयारी जाँच नहीं हो पाती वो आसानी से नक़ल करना सीख लेते हैं। तल्बा वक़्ती तौर पर कामयाब तो हो जाते हैं मगर मुस्तक़बिल में सही राह हासिल नहीं कर पाते।

मोहब्बत और इन्सानियत:

मुअल्लिम को अपने अन्दर मोहब्बत व इन्सानियत जैसी सिफ़ात को परवान चढ़ाना चाहिए
बच्चों को इन्सानियत और लगाव से अपने क़रीब करे। सादा और आसान ज़बान में दिलकश अंदाज से बातें समझाने की अहलियत रखना चाहिए।
क़ारेईने इकराम! यह वो औसाफ़ हैं जो एक उस्ताद को मक़ामे बुलन्दी अता करते हैं और तलबा के लिए उसको रोल मॉडल बनाते हैं कहते हैं कि दरख़्त की पहचान उसके फल से होती है इस तरह शागिर्द की पहचान उस्ताद से होती है लिहाज़ा जो उस्ताद इन औसाफ़ का हामिल होगा तो उसके शागिर्द भी बदर्जा उन औसाफ़ से मुत्तसिफ़ होंगे।
क़ारेईने इकराम! इस मुख़्तसर तोज़ीह से यह बात वाज़ह हो गई के जो इल्म हुसूले नफ़ा या वुसूले फ़ायदा के लिए हासिल किया जाए वो यक़ीनन लायक़े तहसीन होगा अगरचे दुनयावी उलूम ही क्यों न हो।
पैग़म्बरे आज़म ﷺ ने जंगे बदर के बाद कुफ़्फ़ार कैदियों के लिए यह इरशाद फ़रमाया था कि तुम में से हर एक क़ैदी दस दस मुसलमानों को इल्म व हुनर सिखाए और यह ज़ाहिर है के कुफ़्फ़ार उलूम ए दीनिया सिखाने के हामिल न थे लिहाज़ा उन्होंने मुसलमानों को वो उलूम सिखाए जो वो जानते थे। इससे पता चला के उलूमे दुनिया को बिल्कुल नज़र अंदाज़ कर देना भी नादानी है।
अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें इल्म नाफ़े हासिल करने की तौफ़ीक़ से नवाज़े।

तलाक़ का सही मफ़हूम

मोहम्मद जावेद रज़ा मरकज़ी

इस्लाम एक मुकम्मल निज़ामे हयात देता है इस्लाम ने महद से लेकर लहद तक के पेश आने वाले सारे मुआमलात को ख़ूब वज़ाहत के साथ बयान किया है ताके दुनियावी ज़िन्दगी भी गुज़रती रहे और अल्लाह व रसूल ﷺ के क़ायम करदा हुदूद से बाहर भी न हो।

इन्सान को एक उम्र के बाद जिन्से मुख़ालिफ़ की तरफ़ लगाओ होने लगता है और वह एक दुसरे का क़ुर्ब चाहते हैं के दोनों को सुकून मिले।

मगर अल्लाह ने इन्सान को जानवरों की तरह बेमुहार नहीं छोड़ा बल्कि उसके लिए कुछ क़ायदे, क़ानून ज़ाब्ता और हुदूद क़ायम फ़रमाए।

अल्लाह तआला क़ुरआन में इरशाद फ़रमाता है-

"اِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَ ثُلٰثَ وَ رُبٰعَ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً"

और अगर तुम्हें अंदेशा हो के यतीम लड़कियों में इंसाफ़ न कर सकोगे तो उन औरतों से निकाह करो जो तुम्हें पसंद हों , दो दो और तीन तीन और चार चार फिर अगर तुम्हें इस बात का डर हो के तुम इंसाफ़ नहीं कर सकोगे तो सिर्फ़ एक।

(سورۃ النساء آیت نمبر ۳)

इसमें साफ़ तौर पर अल्लाह तआला ने पसंद का ज़िक्र फ़रमाया। रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के जिस से निकाह करो उसे देख लो।

(مفہوم حدیث)

क़ुरआन व हदीस की रौशनी में हम पाते हैं के शादी में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं। बल्कि मर्द व औरत की मर्ज़ी को दख़ल है के शादी दिल जमई के साथ हो के आने वाली ज़िन्दगी खुशगवार गुज़रे।

मगर हम देखते हैं के बहुत कुछ छान बीन करने के बाद भी तबीयतें मेल नहीं खातीं के एक दूसरे का रहन-सहन ,चाल-चलन, उठ-बैठ, ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े, आदतें मुख़्तलिफ़ होती हैं , जिसके नतीजे में कभी कभार एक दूसरे के साथ रहना दुश्वार हो जाता है, अब अगर हम दुनिया में तमाम मज़ाहिब की तरफ़ देखते हैं तो हमें उनमें शादी के तौर तरीक़े मिल जाएंगे मगर ऐसे हालात आ जाएं तो उनसे कैसे निपटा जाए इसकी वज़ाहत मादूम नज़र आती है। मगर क़ुरबान जाऊं शरियते ताहिरा पर के हर हर घड़ी रहनुमाई करती है।

अल्लाह तआला ऐसे हालात के लिए इरशाद फ़रमाता है

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّ بِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَ اهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَ اضْرِبُوْهُنَّ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا (٣٤

मर्द औरतों पर निगेहबान हैं इस वजह से के अल्लाह ने उनमें एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस वजह से के मर्द औरतों पर अपना माल ख़र्च करते हैं तो नेक औरतें (शौहर की) इताअत करने वाली (और) उनकी अदमे मौजूदगी में अल्लाह की हिफ़ाज़त व तौफ़ीक से हिफ़ाज़त करने वालीं होती हैं और जिन औरतों की नाफरमानी का तुम्हें अंदेशा हो तो उन्हें समझाओ और (न समझने की सूरत में) उनसे अपने बिस्तर अलग कर लो और (फिर न समझने पर) उन्हें मारो फिर अगर वो तुम्हारी इताअत करलें तो (अब) उन पर (ज़्यादती करने का) रास्ता तलाश न करो। बेशक अल्लाह बहुत बुलन्द, बहुत बड़ा है।

इसमें समझाने के तरीक़े को बयान किया गया है के मुनासिब अंदाज़ में उन्हें मारो। इस मार से मुराद है के हाथ या मिस्वाक जैसी चीज़ से चेहरे और नाज़ुक

ईज़ा के अलावा दीगर बदन पर एक दो ज़रबें लगा दे। वो मार मुराद नहीं जो हमारे यहां जाहिलों में रायज है के चेहरे और सारे बदन पर मारते हैं , मुक्कों, घूंसों और लातों से पीटते हैं , डंडा या जो कुछ हाथ में आए उससे मारते और लहूलुहान कर देते हैं यह सब हराम व नाजायज़ , गुनाहे कबीरा और परले दर्जे की जिहालत और कमीनगी है।

अब अगर इन सब से काम न चले और कोई सबील बाक़ी न रहे तो आख़िर में इस्लाम ने एक राह बताई के उसको इख़्तियार कर सकते हैं ताकि एक दूसरे को सताया न जाए और न एक दूसरे से क़त्लो ग़ारत की नौबत आए और वह रास्ता तलाक़ है उसके ज़रिए आप एक दूसरे से जुदा हो जाएं और अपनी अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस तलाक़ के अहकाम को भी साफ़ साफ़ बयान फ़रमाया और उसके लिए भी हदें क़ायम फ़रमाईं

तलाक़ मर्द दे किस तरह? और कितनी दे?

इन सब को अल्लाह के नबी ﷺ ने तफ़्सील के साथ बता दिया के मर्द के इख़्तियार में सिर्फ तीन तलाक़ें हैं।

तलाक़ क्या है?

निकाह से औरत शौहर की पाबन्द हो जाती है इस पाबन्दी को उठा देने को तलाक़ कहते हैं।

और इसकी दो सूरतें हैं एक यह के उसी वक़्त निकाह से बाहर हो जाए उसे बायन कहते हैं। दोम यह के इद्दत गुज़रने पर बाहर होगी उसको रजई कहते हैं।

अब तलाक़ देने की तीन सूरतें हैं

अव्वल

अहसन: औरत जब हैज़ से पाक हो जिसे तु नेहर कहते हैं इसमें वती (हमबिस्तरी) न की हो उसमें एक तलाक़ दे और छोड़ दे यहां तक के इद्दत गुज़र जाए।

यह तरीक़ा सब से बेहतर है।

हसन: औरत को तुहरों में एक एक कर के तलाक़ दे इस शर्त के साथ के इस में वती न की हो और न उसको हैज़ आता हो।

बिदई: यह है के एक तुहर में दो या तीन तलाक़ें दे दी हों तीन बार में या दो बार में या यूं कहें कि तुझे तीन तलाक़ें हैं।

यह जो आज कल एक साथ तीनों तलाक़ें देते हैं उनके लिए फ़रमाने मुस्तफा ﷺ काफ़ी है कि आप इस तरह तलाक़ देने से किस क़दर नाराज़ हो गए।

महमूद बिन लुबैद से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ को ख़बर पहुंची के एक शख़्स ने अपनी ज़ौजा को तीन तलाक़ें एक साथ दे दीं उसको सुन कर गुस्से में खड़े हुए और फ़रमाया के किताबुल्लाह से खेल करता है हालांकि मैं तुम्हारे अंदर अभी मौजूद हूं।

मगर आज तो जिहालत का बोल बाला है लोग अल्लाह व रसूल ﷺ की नाफ़रमानी करते हुए एक साथ तीनों तलाक़ें दे देते हैं।

अब उसके बारे में बताया गया के अगर कोई शख़्स अपनी बीवी को तीन तलाक़ें दे दे तो वह औरत उसके लिए अब किसी सूरत जायज़ नहीं सिवाय एक सूरत के।

जिस तरह अल्लाह तआला ने क़ुरआने पाक में दूसरे अहकामात ज़िक्र फ़रमाए हैं के अगर ज़िना किया तो सौ कोड़ों की सज़ा मुतय्यन की , अगर चोरी की तो हाथ काटा जाए, ठीक उसी तरह अल्लाह तआला ने फ़रमाया

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ

अगर शौहर बीवी को (तीसरी) तलाक़ देदे तो अब वह औरत उसके लिए हलाल न होगी। अब आगे बन्दों पर रहम फ़रमाया और फ़रमाता है

حَتّٰی تَنۡکِحَ زَوۡجًا غَیۡرَہٗ ؕ

जब तक दूसरे ख़ाविन्द से निकाह न करे।

(سورۃالبقرہ۲۳۰)

इस्तेलाहे फ़िक्ह में इसको हलाला लफ़्ज़ से याद किया जाता है , जिसको लेकर इस्लाम से बुग़्ज़ रखने वाले आए दिन शोरो गुल करते हैं और इस पाकीज़ा व हिकमत से पुर निज़ाम पर उंगली उठाते रहते हैं। मगर कुछ नाआक़िबत अन्देश मुस्लिम भी इस में गिरफ़्तार नज़र आते हैं।

अब ग़ौर किया जाए शरा ने तो हलाला के लिए निकाह करने वाले पर लानत फ़रमायी है।

शरियत में सब कुछ औरत की मर्ज़ी पर मौक़ूफ़ क़रार दिया गया है।

अगर औरत की मर्ज़ी हो तो वह कहीं भी शादी करे या न करे, इसमें वह पूरा पूरा इख़्तियार रखती है।

हासिल है के पहले से शादी करे या न करे इन्दश-शरा [शरीयत के नज़दीक] कोई दबाव नहीं।

यह कब है जब के वह तीन तलाक़ें दे दे अब जिस तरह भी दी हों।

ज़रूरत इस बात की है के हम अपनी नौजवान नस्ल को अहकामे शरा सिखाएं ताकि अल्लाह व रसूल ﷺ की नाफरमानी से बचें।

जवानी की बरबादी

फरदीन अहमद खान रज़वी

अल्लाह रखे तेरी जवानी को सलामत

दे उनको सबक़ ख़ुद शिकनी ख़ुद नगरी का।

अल्लाह तबारक व तआला ने बनी नौए इन्सान को एक मुक़र्रर मुद्दत के लिए इस ख़ाकदाने गीती में भेजा है जिसके बाद हर इन्सान को अपने मालिके हक़ीक़ी की तरफ पलटना है। हर इन्सान की ज़िन्दगी में चन्द मुख़्तलिफ़ अदवार होते हैं , अहदे तिफ़्ली [बचपना] , जहां वह अपनी ज़रूरियात को पूरा करने के लिए किसी के सहारे का मोहताज होता है। अहदे शबाब[जवानी] , जहां उसके अन्दर शऊरो फ़िक्र अंगड़ाई लेते हैं और एहसासात बेदार होते हैं , फिर उसके आगे के दौर में उसकी अक़्ल कामिल होती है और फिर उसके इनहितात का दौर शुरु हो जाता है , ज़ुअफ़ व पीरी [कमज़ोरी और बुढ़ापे] से वह हमकिनार होता है और बिल आख़िर अपनी मियाद पूरी करके इस दुनिया से रुखसत हो जाता है। इस तमहीद से वाज़ेह है कि अहदे तिफ़्ली और अहदे पीरी में आदमी गुनाहों के इरतिकाब की ताक़त अहदे शबाब के मुक़ाबिल बहुत कम या फिर बिल्कुल नहीं रखता , और इस बात से भी मजाले इंकार नहीं के इबादत और ख़ास तौर से बदनी इबादत , भी आदमी इन दो अदवार में शबाब की बनिस्बत कम कर सकता है। यूं अगर कहा जाए तो हरचंद ग़लत न होगा के इन्सान की ज़िन्दगी के इन अहम अदवार में अहदे शबाब अहम तरीन दौर है , अगर इसे तस्लीम करने में भी कुछ तरद्दुद हो तो इतना तो हर ज़ी शऊर को तस्लीम करना होगा के यह दौर दूसरे अदवार के मुक़ाबले में ज़्यादा तवज्जो का हामिल है। इस मुख़्तसर से मज़मून में हम कोशिश करेंगे के जवानी के सही मफ़हूम को समझ कर उसकी बरबादी के असबाब पर रौशनी डालें और मुम्किन चाराह साज़ी पर ग़ौर करें।

अहदे शबाब या जवानी:

मेरे मुअज़्ज़िज़ क़ारेईन! क्या आपने ग़ौर फ़रमाया आख़िर जवानी क्या है ? अगर लुग़ते अरबिया का मुताला करेंगे तो पाएंगे के अहले अरब इसे कुछ यूं ताबीर करते हैं:

الشباب مصطلح يطلق على مرحلة عمرية هي ذروة القوة والحيوية والنشاط

यानी शबाब ज़िन्दगी के उस मरहले का नाम है जिसमें इन्सान की क़ुव्वतें बेदार होती हैं और वह सरगर्मी व जोश का महवर होता है और उसकी ज़िन्दगी इरतिक़ा के मराहिल से दो चार होती है।

यक़ीनन जवानी उस दौर का नाम है जब इन्सान के अंदर उमंगों का एक सैलाब ठाठें मार रहा होता है , जब उसकी क़ुव्वतें अंगड़ाईयां लेती हैं , जहां उसके दिल व दिमाग़ में जोश व ख़रोश के दरिए बहते हैं , जहां दिल के दामन में बेपनाह ख़्वाहिशात मुन्तज़िरे ज़ुहूर रहती हैं। और अगर शबाब को इस तरह ज़बान ताबीर दी जाए तो ग़लत न होगा के यह इंक़लाब का दौर होता है , ज़ाहिरी व बातिनी तमाम तर औसाफ़ इस दौर में आकर मुताग़य्यर हो जाया करते हैं , इंसान के नशेबो फ़राज़ , वज़ा, महासिन, ख़साइल अलग़र्ज़ हर चीज़ इंक़लाब पज़ीर हो जाती है। क्या ख़ूब कहा है जोश मलीहाबादी ने–

काम है मेरा तग़य्युर नाम है मेरा शबाब

मेरा नारा इंक़लाबो इंक़लाबो इंक़लाब।

फिर अगर इस बात पर ग़ौर किया जाए के आख़िर वो कौन सी उम्र है जिसे हम इन्सान की ज़िन्दगी का शबाब कह सकें तो इसमें मुख़्तलिफ़ अफ़राद की मुख़्तलिफ़ आरा [राये] हैं, अक़वामे मुत्तहिदा के मुताबिक़:

The United Nations, for statistical purposes defines those persons between the ages of 15 and 24 as youth.

यानी अक़वामे मुत्तहिदा , शुमारियाती अग़राज़ से , 15 से 24 के अफ़राद को शबाब तस्लीम करती है। वहीं अक़वाम मुत्तहिदा के मातहत एक दूसरे इदारे UN-Habit के मुताबिक़ उम्र 15 से 35 के अफ़राद शबाब में शुमार किए जाते हैं।

अगर तफ़ासीर का मुताला करें तो मुख़्तलिफ़ उलमा की भी यही राय है कि जवानी का अरसा बुलूग़त [बालिग होने] से 35 साल या 40 साल है इसके बाद कुहूलत का अरसा 40 से 50 और उसके बाद पीरी का दौर शुरु हो जाता है।

जवानी की अहमियत:

मोहतरम क़ारेईन जब हमने यह जान लिया कि इन्सान की ज़िन्दगी का एक वाफ़र हिस्सा जवानी है और दरअसल ज़िन्दगी में इंक़लाब व तहरीक का दौर भी यही होता है, तो इस बात को समझने में ज़रा भी दुश्वारी नहीं होगी के जवानी के अय्याम में इबादत की कितनी फ़ज़ीलत है और इस दौर में आदमी को नफ़सानी ख़्वाहिशात से किस क़दर जिहाद करना पड़ता है। ज़ाहिर है जब जिस्म में क़ुव्वत है, रंगों में ख़ून का सैलाब है , तवानाई क़दम बोसी कर रही है , दिलो दिमाग़ में ख़्यालों का एक जहां आबाद है और जितनी भी क़ुव्वतें अभी बेदार हुईं हैं वो सब अपने जौहर दिखाने की मुन्तज़िर हैं ताहम अक़्ल में भी पुख़्तगी नहीं तो आदमी बाआसानी ग़लत रविश इख़्तियार कर सकता है। मुमकिन है कि वह इन तमाम तहाइफ़े क़ुदरत को अपनी नादानी में बरबाद कर बैठे , इन तमाम इनामात को नफ़्सो हवा के नज़र कर दे , किसी ख़्वाहिश की हल्की सी चिंगारी उसके निहां ख़ाने में आतिश ज़नी का सबब बने , तग़य्युर व इंकलाब की बिजलियां उसके ख़िरमन को ज़ेरो ज़बर कर दें , ज़रा सी ठोकर से दिले नाज़ुक पारा पारा हो जाए , अदना सा ग़मो फ़िक्र उसके दिमाग़ में ज़लज़ला बन के उभरे। ऐसे में कितना ज़रूरी है कि एक नौजवान के अहदे शबाब की हिफ़ाज़त की जाए, उसे उन तमाम अशिया से दूर रखा जाए जो उसकी जवानी को बरबाद कर सकती हैं। मेरे मुअज़्ज़िज़ क़ारेईन ग़ौर फ़रमाएं! आज के इस पुर असबाब

दौर में जहां उरयानियत , फ़हाशी आम हो चुकी है , महफ़िलों में शराब व ज़िना का दौर दौरा है, आदमी की फ़िक्रो नज़र की पाकीज़गी ख़त्म हो चुकी है , ज़हन पूरा गन्दा हो चुका है, एक नौजवान किस तरह अपनी हया व इसमत व इज़्ज़त की पासबानी करे? कैसे अपने आप को इस दलदल में गिरने से बचाए ? क्यों कर इस मकरो फ़रेब के दाम से ख़ुद को आज़ाद करे? यह इस वक़्त का सबसे अहम सवाल है जिसके जवाब में मग़रिबी दानिशवरों के दहन गुंग और सर शरम से झुके हुए हैं।

हया नहीं है ज़माने की आँख में बाक़ी

ख़ुदा करे के जवानी तेरी रहे बेदाग़।

इस्लाम में जवानी का तसव्वुर:

अल्लाह तबारक व तआला का नाज़िल करदा इस्लाम पूरी कायनात के लिए कामिल व अकमल तरीका ए ज़िन्दगी और दस्तूरे हयात की हैसियत रखता है , यह हर दौर और हर उस्र का दीन है, यह वक़्त की तेज़ रफ़्तारी के सबब बोसीदा नहीं होता, बल्कि हर गुज़रता लम्हा इसकी शान व अज़मत में बायस बनता है। जहां इस्लाम ने इन्सान की ज़िन्दगी के हर पहलू के हवाले से वाज़ेह निज़ामे अमल हमें दिया है वहीं अहदे शबाब जैसे अहम तरीन दौर को सही तरीके से बसर करने का मुकम्मल ज़ाब्ता भी इसमें मौजूद है। अगर एक इस्लामी नौजवान का ख़द्दो ख़ाल देखना चाहें तो आइए पैग़म्बरे इन्सानियत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ के मुबारक इरशाद में तलाशें:

سبعة يظلهم الله في ظله يوم لا ظل إلا ظله: الإمام العادل، وشاب نشأ في عبادة ربه، ورجل قلبه معلق في المساجد، ورجلان تحابا في الله اجتمعا عليه وتفرقا عليه، ورجل طلبته امرأة ذات منصب وجمال، فقال: إني أخاف الله، ورجل تصدق أخفى؛ حتى لا تعلم شماله ما تنفق يمينه، ورجل ذكر الله خاليًا ففاضت عيناه

तर्जुमा: क़यामत के दिन सात तरह के इन्सान को अल्लाह का साया हासिल होगा जिस दिन सिवाय अल्लाह के साय के किसी और तरह का कोई साया न होगा, इनमें से इमाम आदिल, ऐसा नौजवान जिसने अपनी जवानी अल्लाह की इबादत में गुज़ारी , ऐसा शख़्स जिस का दिल हर वक़्त मस्जिद में मुअल्लक़ रहता हो, दो ऐसे इंसान जो आपस में एक दूसरे से मोहब्बत और नफ़रत सिर्फ अल्लाह के लिए करते हैं और ऐसा शख़्स जिसे किसी ख़ूबसूरत और बा हैसियत औरत ने गुनाह की दावत दी और उसने कहा हो के मैं अल्लाह से डरता हूं , और ऐसा शख़्स जो इतनी राज़दारी से सदक़ा करता हो के बाएं हाथ को भी ख़बर न हो सके के दाएं हाथ से कुछ दिया है और ऐसा शख़्स के जब भी अल्लाह का ज़िक्र करे तो उसकी आंखें भर आएं।

इसी तरह एक और रिवायत में है के:

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदि अल्लाहु अनहु से रिवायत है रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया के रब तआला इरशाद फ़रमाता है: मेरी तक़दीर पर ईमान लाने वाला, मेरे लिखे पर राज़ी रहने वाला , मेरे दिए हुए रिज़्क़ पर क़नाअत करने वाला, और मेरी रज़ा की ख़ातिर नफ़सानी शहवात को तरक करने वाला नौजवान मेरी बारगाह में मेरे बाज़ फ़रिश्तों की मानिंद है।

मालूम यह चला के इस्लाम में नौजवान वही बेहतरीन है जो अपनी जवानी को नफ़सानी ख़्वाहिशात से परे रखकर ख़ुदावन्द तआला की बन्दगी में लगा रहे और अपनी इसमत व पारसाई की ख़ूब हिफ़ाज़त करे। यूं ही चूं के जवानी में इबादत से रोकने वाले बहुत से असबाब होते हैं , जवानी में इबादत करने वाले की फ़ज़ीलत बूढ़े आबिद से ज़्यादा है, इरशादे नबवी है:

सुबह के वक़्त इबादत करने वाले नौजवान को बुढ़ापे में इबादत करने वाले बूढ़े पर ऐसी ही फ़ज़ीलत हासिल है के जैसी मुरसलीन (अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम) को तमाम लोगों पर। इन इरशादाते नबविया में हर नौजवान के लिए इल्मो हिकमत का ख़ज़ाना मौजूद है, यह वो बहरे बे करां है जहां से लाखों

अफ़राद इल्मो हिकमत के जाम पी चुके और आज भी यह वैसा ही लबालब भरा हुआ है बल्कि मेरे आक़ा ﷺ ने ख़ुद फ़रमा दिया के "बेशक अल्लाह देने वाला है मैं तक़सीम करता हूं।" क्या ख़ूब इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं:

रब है मुअती ये हैं क़ासिम

रिज़्क़ उसका है खिलाते ये हैं।

मैं निहायत ज़िम्मेदारी से कहना चाहता हूं कि अगर हर इन्सान बिल्ख़ुसूस हर नौजवान इन इरशादात पर अमल करे तो उसकी ज़िन्दगी रशक़े सद आफ़ताब हो जाएगी और वो अपने मक़सदे हक़ीक़ी को पालेगा।

जवानी की बरबादी के असबाब:

ऐ मुस्लिम क़ौम के नौजवानों क्या तुम्हें कुछ ख़बर भी है दुनिया ने तुम्हारे लिए कैसे कैसे जाल बिछा रखे हैं ? हर गली हर चौराहे हर कूचे हर मुहल्ले में उरयानियत को सरेआम मुफ़्त तक़सीम किया जा रहा है। तुम्हारी जेबों में रखे मोबाइल से लेकर तुम्हारे घरों में सजे टीवी तक कौन सा ऐसा मक़ाम है जहां फ़हश व उरयां [नंगे लोग] अफ़राद नज़र न आते हों ? बेरहवरी की शिकार निस्वां[औरतों] को चन्द पैसों का लालच देकर सरे आम उरयां किया जा रहा है , एक औरत की इसमत व इज़्ज़त को हर लम्हा ज़िन्दा दरगोर किया जा रहा है। औरत को फ़क़त एक खेल का सामान बता कर उसकी पाकीज़गी को बीच चौराहे पर ज़िब्ह किया जा रहा है। और यह सब कुछ हमारी आंखों के सामने हो रहा है! आज का नौजवान दरअसल उरयानियत के सौदागरों के हाथों बिक चुका है, उसके होशो ख़िर्द पर आवारगी के सियाह परदे गिर चुके हैं और उसे अब अपनी पारसाई का कुछ ख़्याल नहीं रहा। इस नौजवान को तमाशेबाज़ बेगैरत अफ़राद का गन्दा तरज़े हयात तो हिफ़्ज़ है मगर यह किरदारे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भूल चुका है, इसे खेलने कूदने वाले लोगों की ज़िन्दगियों के

बारे में तो मुकम्मल मालूमात है मगर इसे बदरो हुनैन व अहज़ाब का कुछ इल्म नहीं, यह अपनी आंखों को गन्दी व फ़हश औरतों के आज़ा देखकर सियाह तो करना जानता है मगर इसे क़ुरान पढ़ कर यादे इलाही में आंखें तर करना नहीं आता। हक़ीक़त हाल तो यह है कि क़लम व बयान की शराफ़त ने मेरे हाथों में सलासिल डाल दी हैं वरना वो सब बयान करता जो आज का नौजवान कर रहा है। अगर सच पूछें तो दरअसल आज का नौजवान ज़िन्दा नज़र तो आता है मगर अंदर से मर चुका है, इसका ज़मीर कब का दफ़न हो चुका है, ख़िर्द कब की रहलत फ़रमा गयी, इश्क़ो यक़ीन कब के फ़ौत हो गए।

ख़िर्द ने कह भी दिया लाइलाहा तो क्या हासिल

दिलो निगाह मुसलमान नहीं तो कुछ भी नहीं।

चाराह साज़ी:

ऐ नौजवान नस्ल के लोगों मालिक हक़ीक़ी की बारगाह में क्या जवाब दोगे ? जिस इस्लाम के लिए हज़रते हम्ज़ा रदि अल्लाहु अनहु जैसे जांबाज़ ने अपनी जान कुर्बान की, इमाम हुसैन रदि अल्लाहु अनहु जैसे शेर ने अपना सर कलम करवाया, सहाबा ने ख़ूने जिगर से जिस दरख़्त को सींचा है , तुम उसी की जड़ें खोदने में लगे हो! तुम्हें उसी दीन की हिकमतें पाबन्दियां नज़र आती हैं ? तुम्हें उसी निज़ाम पर अमल मुश्किल नज़र आता है ? नहीं मेरे दोस्तों नहीं! इस्लाम ही तुम्हारा सबसे अच्छा दोस्त है, यह दुनियावी दोस्त आज हैं कल नहीं होंगे मगर यह इस्लाम तुम्हें कल क़यामत के दिन सुर्ख़ रु करेगा। आज भी तौबा का दरवाजा खुला है। याद रखो शेख़ सादी रहमतुल्लाह अलैह का यह क़ौल-

در جوانی توبہ کردن شیوہ پیغمبری

وقت پیری گرگ ظالم میشود پرہیز گار

जवानी में तक़वा,परहेज़गारी इख़्तियार करना ही तो पैग़म्बरों का शेवा है वरना बुढ़ापे में तो ज़ालिम भेड़िया भी परहेज़गार बन जाता है , इसलिए मेरे साथियों बेहयाई, उरयानियत, फ़हाशी से क़तअन अलग हो जाओ और ज़माने को पैग़ाम दो के मुसलमान कल भी इस मग़रिबी निज़ाम से मुस्तग़नी [बेनियाज़] था और आज भी है।

ना ढूंढ उस चीज़ को तहज़ीबे हाज़िर की तजल्ली में,

के पाया मैंने इस्तिग़ना में मेराजे मुसलमानी।

अल्लाह तबारक व तआला हमें अमल की तौफ़ीक अता फ़रमाए और मज़हबे इस्लाम का सच्चा पैरोकार बनाए।

माहौल बदलें, आदतें ख़ुद बदल जाएंगी

गुलाम मुस्तफा नईमी

इन्सानी ज़िन्दगी के नशवो नुमा में माहौल का बड़ा दख़ल होता है... हर इन्सान अपने आस पास के माहौल से मुतास्सिर होता है... उसी के मुताबिक सोच व फ़िक्र परवान चढ़ते हैं... इसीलिए आक़ा ए दो जहां ﷺ फ़रमाते हैं:

الرَّجُلُ عَلَى دِينِ خَلِيلِهِ فَلْيَنْظُرْ أَحَدُكُمْ مَنْ يُخَالِلُ.

(ابو داؤد شریف رقم الحدیث 4833)

"आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है , लिहाज़ा तुम में से हर शख़्स को यह देखना चाहिए के वह किस से दोस्ती कर रहा है।"

अंग्रेजी की मशहूर कहावत है:

The life is ten percent how to make it and Ninety percent how to take it.

दस फ़ीसद ज़िन्दगी वह है जिसे आप ख़ुद बनाते हैं लेकिन नव्वे फ़ीसद ज़िन्दगी माहौल बनाता है।

इन्सानी ज़िन्दगी में माहौल की बहुत अहमियत है। माहौल ही इन्सान की सोच , शऊर और शख़्सियत पर असर अंदाज़ होता है। जो जिस माहौल में रहता है उसका ज़हन उसी के मुताबिक काम करता है। इसलिए अच्छे मुआशरे और बेहतरीन शख़्सियत की तश्कील के लिए अच्छा माहौल होना बेहद ज़रूरी होता है!!

अली बिन जहम एक तबअ ज़ाद और फ़सीह व बलीग़ शायर था... लेकिन उसकी ज़िन्दगी का बड़ा हिस्सा सहराओं और देहातों में गुज़रा था...अख्खड़ और सख़्त मिज़ाज लोगों से यारियां थीं... इसी वजह से बेहतरीन शायर होने के

बावजूद अली बिन जहम में भी रुखापन और अख्खड़ मिज़ाजी का ग़ल्बा था...इस ज़माने में ख़लीफ़ा अबु जाफ़र मुतवक्किल अलल्लाह (207-247 हि) तख़्ते ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन था... एक मर्तबा अली बिन जहम वारिदे बग़दाद हुआ तो लोगों ने उसे तरग़ीब दिलाई के तुम भी ख़लीफ़ा की शान में कोई क़सीदा लिखो और इनाम व इकराम हासिल करो...अली बिन जहम हुसूले इनाम के लिए दरबार जा पहुंचा... बड़े बड़े शोअरा मुतवक्किल की मदह सराई में रतबुल लिसान थे... अली बिन जहम ने भी अपनी बारी पर क़सीदा कहना शुरू किया, मतला था:

أنتَ كَالكَلبِ فِى حِفاظِك لِلوُدِّ

وَكَالتّسيسِ فى قِراعِ الخُطوبِ

"आप मोहब्बत की हिफ़ाज़त और वफ़ा शियारी में कुत्ते की तरह है और मुसीबतों को टालने में सांड की मानिंद हैं"

أنتَ كَالدّلو لَا عَدِمت دَلواً

مِن كِبارِ الدّلاء كَثِير الذّنوبِ

आप एक कुएं की तरह हैं जिसका बहना कभी बन्द न हो। ऐसा बड़ा कुंआ जो पानी बढ़ा कर देता है।"

अशआर सुनते ही ख़लीफ़ा की तियोंरियां चढ़ गयीं....अब तक शोअरा ख़लीफ़ा को चांद, सितारों, पहाड़ों और शेरों से तशबीह दे रहे थे लेकिन अली बिन जहम कुत्ते, सांड, और कुएं वगैरह से तशबीह दे रहा था... ग़ैज़ो ग़ज़ब में हुक्म दिया, इस बेअदब की गर्दन मार दी जाए... जल्लाद तामीले हुक्म के लिए तैयार था... अचानक ख़लीफ़ा को एहसास हुआ कि अली बिन जहम के अशआर तो निहायत शुस्ता और फ़साहत से लबरेज़ हैं बस तशबीह ग़लत है...

शायद इसकी नशिस्तो बर्खास्त गंवारों और जाहिलों के दरमियान रही है...जिसकी वजह से यह गंवारों जैसी मिसालें दे रहा है...यह ख़्याल आते ही ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया के अली बिन जहम को एक आलीशान महल में ठहराया जाए.... ख़ूबसूरत कनीज़ें, अनवा व अक़साम के फल उसके आस पास रखे जाएं...शहर के अदबा और माहेरीने सुख़न से उसकी मुलाक़ातें कराई जाएं... ज़िन्दगी में पहली बार अली बिन जहम इतनी नेमतों और आसायशों से आशना हुआ... महल में बड़े बड़े अदबा से मुलाक़ातें होतीं...माहेरीने फुनून से तबादला ख़्याल होता...इसी तरह कई माह गुज़र गए... एक दिन ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया के अली बिन जहम को हाज़िरे दरबार किया जाए... अली बिन जहम हाज़िर हुआ, हुक्म हुआ, इब्ने जहम! हमारे लिए क़सीदा कहो....अली बिन जहम ने मतला पेश किया:

عُيُون المَهَا بَين الرُّصافة وَالجِسر

جَلَبن الهوٰى مِن حَيث أدرِى وَلَا أدرى.

"गुलशन और पुल के दरमियान नील गाए सी आंखों ने इश्क़ की आग को भड़का दिया, इस तरह के मैं जान कर भी नहीं जानता!!"

أعَدنَ لىَ الشَوق القدِيم وَلَم أكُن

سَلوت وَلٰكن زِدنَ جَمراً علىٰ جَمر

"उन्होंने पुराने इश्तियाक़ को फिर जगा दिया जबकि अभी मेरा ग़म ग़लत नहीं हुआ था।

इन आंखों ने कोयले पर कोयला रख कर सुलगती चिंगारी हवा दे दी है।"

इसके बाद अली बिन जहम अपने फ़सीह अशआर सुनाता रहा और ख़ूबसूरत तशबीहात व तमसीलात से ख़लीफ़ा के दिल को धड़काता रहा... अपने अशआर में अली बिन जहम ने नील गाए सी आंखें , चांद सूरज जैसे इस्तआरे इस्तेमाल

करके ख़लीफ़ा को सहरे सुख़न का असीर बना लिया....ख़ुश होकर ख़लीफ़ा ने अली बिन जहम को इनाम व इकराम से मालामाल कर दिया....

ग़ौर करें!!

के चन्द महीनों में अली बिन जहम के अंदर यह तब्दीली किस तरह आई ? जवाब है "माहौल की तब्दीली से!"

ख़लीफ़ा ने एक ज़रा सी तब्दीली से अली बिन जहम की सोच और अंदाज़े फ़िक्र बदल दिया.... और माहौल की तब्दीली से उसकी फ़ितरत में इतनी बड़ी तब्दीली आ गई।

आज मुआशरे में लोग अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और बीवी बच्चों की सख़्त मिज़ाजी और बदख़ोई की शिकायतें करते हैं.... क्या हमने कभी उनके ख़साइल व आदात बदलने की कोई कोशिश की?

बल्कि इससे भी कहीं ज़्यादा ज़रूरी यह है के तब्दीली की शुरुआत हम ख़ुद से करें...तुर्श रुई छोड़ें... चेहरे पर मुस्कराहट लाएं... ग़ुस्सा ज़ब्त करें.... तहम्मुल व बुर्दबारी से काम लें... शिकायत की आदत तर्क करें...ख़ुश रहने की वजह तलाश करें...यह काम गरचे मुश्किल है लेकिन एक बार आप इस पर अमल पैरा हो गए तो माहौल बदल जाएगा.... माहौल बदलते ही आस पास के लोगों की आदात व अतवार में भी नुमायां तब्दीली आएगी:

सिर्फ़ लहजे को बदलने की ज़रूरत है मियां!

गुफ़्तगू आप की गुलरेज़ भी हो सकती है।

कारोबार में हलाल व हराम

अज़मत हुसैन क़ादरी मंज़री

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الحمد للہ العلی الحق المبین والصلاۃ والسلام علی امام الانبیاء والمرسلین وعلی آلہ واصحابہ اجمعین، اما بعد

अज़ीज़ाने गिरामी "अल्लाह तआला ने क़ुरआने मुक़द्दस में इरशाद फ़रमाया।

وکلوا مما رزقکم اللہ حلالا طیبا

(سورہ مائدہ آیت نمبر 7)

और खाओ जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी दी हलाल पाकीज़ा,

हुक्मे रब्बानी के मुताबिक़ जायज़ तरीक़े से रोज़ी कमाना और खाना इसी तरह फ़र्ज़ है जिस तरह दूसरे अरकाने इस्लाम यानी मुसलमान के लिए नमाज़ रोज़े की तरह हलाल रोज़ी का कमाना और खाना फ़र्ज़ है,

चुनान्चे हज़रत अब्दुल्लाह रदि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया,

طلب کسب الحلال فریضۃ بعد الفریضۃ

(السنن الکبری للبیھقی صفحہ نمبر 128)

यानी फ़र्ज़ बातों के बाद एक और फ़र्ज़ कसबे हलाल(हलाल कमाई) की तलाश है।

हलाल लुक़्मा खाने के लिए हलाल रोज़ी कमाना फ़र्ज़ है। हलाल रोज़ी खाने के बारे में इरशाद रब्बानी है

یا ایھا الناس کلوا من طیبت ما رزقنکم

(پارہ نمبر 2

ऐ ईमान वालों! हलाल और पाकीज़ा रिज़्क़ खाओ जो हमने तुम्हें अता किया है।

लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिए के तिजारत में दिलचस्पी लें क्योंकि एक तिजारत में कई लोगों की ज़रूरतें पूरी होती हैं और इससे बेरोज़गारी भी दूर होती है और तिजारत ही सबसे आला तरीक़ा है बेरोज़गारी दूर करने का।

मज़हबे इस्लाम ने रिज़्क़ हासिल करने के लिए किसी ख़ास ज़रिया ए मुआश को अपनाने का पाबन्द नहीं बनाया है लेकिन इस बात पर बिल्ख़ुसूस तवज्जो दिलाई है कि जो भी पेशा इख़्तियार किया जाए वो जायज़ और हलाल हो तिजारत को अफ़ज़ल ज़रिया ए मुआश क़रार देने में सबसे बड़ी वजह यह है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने ख़ुद तिजारत फ़रमाई है। आप ने साझे (बराबर की हिस्सेदारी) में कारोबार किया और मुज़ारिबत (हमारा माल लीजिए हम इतना हिस्सा आप को देंगे वगैरह) में भी कारोबार किया , ऐलाने नबुव्वत से पहले हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रदि अल्लाहु तआला अन्हा से मुज़ारिबत की बुनियाद पर तिजारत फ़रमाई। इस तरह हज़रत अब्दुल्लाह बिन सायब के साथ साझे में तिजारत फ़रमाई।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सायब फ़रमाते हैं कि ज़माना ए जाहिलियत में मोहम्मद ﷺ का शरीके तिजारत था मैं जब मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुआ तो आपने फ़रमाया के तुम मुझे जानते हो? अर्ज़ किया क्यों नहीं? आप तो मेरे बहुत अघ्छे शरीकेकार थे न किसी बात को टालते न किसी बात पर झगड़ा करते।

(خصائص الکبری)

कारोबार करने की बहुत सी सूरतें हैं लेकिन जायज़ तरीक़े से रिज़्क़ हासिल करने को अल्लाह तआला ने अफ़ज़ल फ़रमाया है क़ुरआने मजीद में है , फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल (रिज़्क़) तलाश करो और अल्लाह को बहुत याद करो इस उम्मीद पर के फलाह पाओ।

(پارہ28 سورہ جمعہ ،ایت نمبر 10)،

जब नमाज़ से फारिग हो जाओ तो अल्लाह तआला के रिज़्क़ की तलाश में लग जाओ यह तुम्हारे लिए हलाल है।

उराक़ बिन मालिक जुमे की नमाज़ से फारिग हो कर मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते और यह दुआ पढ़ते ;ऐ अल्लाह मैंने तेरी आवाज़ पर हाज़री दी और तेरी फ़र्ज़ करदा नमाज़ अदा की फिर तेरे हुक्म के मुताबिक़ इस मजमे से उठ आया। ऐ रब तू मुझे अपना फ़ज़्ल (रिज़्क़) अता फ़रमा तू सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है,

(ابن ماجه)

इस्लाम में तिजारत के बहुत फ़ज़ाइल हैं लेकिन यह तमाम फ़ज़ीलतें उसी ताजिर को हासिल होंगी जो इस्लामी उसूल और हुज़ूर अकरम ﷺ के बताए हुए तरीक़े पर तिजारत करेगा किसी को धोखा न देगा क्योंकि धोखा देने वाला कामिल मुसलमान नहीं माना जाता और हक़ीक़त तो यह है के धोखा देने वाला ख़ुद अपने आप को ही धोखा देता है।

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया जो मुसलमानों को धोखा दे वह हम में से नहीं,

(الترغيب والترهيب رواه البخاری ومسلم)

यानी मुसलमान कहलाने के लायक नहीं ताजिर मुसलमानों को ग़बन और फ़िरॉड से बचना चाहिए ऐसा करने से ताजिर की सच्चाई और ईमानदारी का चर्चा हो जाता है और सबसे बड़ी बात अल्लाह की रहमत और बरकत शामिल हो जाती है। इसलिए के हलाल अगरचे क़लील है मगर इसमें बरकत है।

और माल बेचने के लिए झूठ न बोलें , अल्लाह तबारक व तआला ने झूठों पर लानत फ़रमायी है।

لعنة الله على الكاذبين،

(سوره آل عمران)

नबी ए रहमत ﷺ ने फ़रमाया आम ताजिर लोग गुनाहगार और फ़ाजिर हैं सहाबा ए इकराम ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह क्या कारोबार को अल्लाह ने हलाल नहीं किया ? आप ने फ़रमाया जिस का मफ़हूम हदीस यह है कारोबार बिल्कुल हलाल है लेकिन अक्सर ताजिर झूठी कसमें खाते हैं और अपनी चीज़ों के बारे में झूठी झूठी चीज़ें बयान करते हैं इस तरह अक्सर गुनहगार हो जाते हैं।

معاذاللہ ثم معاذاللہ

(الترغیب والترہیب)

आज हमारे मुआशरे में अन गिनत बुराइयां घर कर चुकी हैं एक दो हों तो गिनाया जा सके दो चार हों तो उसका रोना रोया जाए अल्लाह तबारक व तआला ने रसूलों के आने का मक़सद यह भी बताया है कि मैं ने इंसाफ के तराज़ू के साथ रसूलों को भेजा और यह भी फ़रमाया कि तराज़ू में बे एतिदाली न करो और इंसाफ़ के साथ तोल क़ायम करो और वज़न न घटाओ।

(سورہ رحمٰن)

और कम तोलने वालों को आगाह फ़रमाया , कि कम तोलने वालों के लिए ख़राबी है के जब वह औरों से नाप लें पूरा लें और जब उन्हें तोल कर दें कम कर दें।

(سورہ مطففین)

तिजारत करना कारोबार करना अल्लाह को पसंद है रिज़्क़े हलाल कमाने के जो भी रास्ते हैं अल्लाह को पसंद हैं जो शख़्स अपने अहलो अयाल का पेट पालने के लिए मेहनत करता है और हलाल कमाई कमाता है ताकि किसी के सामने दस्ते सवाल दराज़ न करना पड़े वह भी अल्लाह के रास्ते में है।

(الطبرانی)

लेकिन मेरे भाईयो आज कल तो इस उम्दा पेशे को झूठ बोल कर कम तोल कर बदतरीन पेशा बना दिया गया ऐसे लोगों के बारे में फ़रमाने नबवी है के ज़मीन का बेहतरीन टुकड़ा मसाजिद हैं और बदतरीन हिस्सा बाज़ार हैं जहां कम तोला जाता है और झूठी कसमें खाई जाती हैं और शैतान हर सुबह झण्डा लेकर बाज़ार में पहुंच जाता है। फिर रसूले अकरम ﷺ ने ऐसे ताजिरों को फ़ासिक़ व फ़ाजिर ठहराया है जो झूठी कसमें खाते हैं और कम तोलते हैं चुनान्चे फ़रमाया

التجار يحشرون يوم القيامه فجارا الا من اتقي و بر و صدق

(مشکوٰۃ شریف صفحه 234)

क़यामत के रोज़ ताजिरों का हश्र फ़ाजिरों के साथ होगा मगर उन ताजिरो के सिवा जो अल्लाह तआला से डरें नेकी करें और सच बोलें।

फिर फ़रमाया के ख़रीदो फ़रोख़्त के वक़्त बहुत क़समें खाने से बचा करो इससे चीज़ तो बिक जाती है मगर बरकत ख़त्म हो जाती है।

चुनान्चे ऐसे लोगों के बारे में फ़रमाने नबवी है कि,

ثلاثه لا يكلمهم الله يوم القيامه ولا ينظر اليهم ولا يزكيهم ولهم عذاب اليم قال ابو ذر خابوا وخسروا من هم يا رسول الله قال المسبل والمنان والمنفق سلعته بالحلظ الكاذب

मिशकात शरीफ़ में हज़रत मुस्लिम से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया के तीन शख़सों से अल्लाह तआला क़यामत के दिन कलाम नहीं फ़रमाएगा।

और न ही उनकी तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाएगा और न उन्हें पाक करेगा और उनके लिए तकलीफ़देह अज़ाब होगा हज़रत अबुज़र ने अर्ज़ किया वह नुकसान उठाने वाला और नाउम्मीद कौन है या रसूल अल्लाह ? तो फ़रमाया कपड़ा लटकाने वाला, एहसान जतलाने वाला , और झूठी कसमें खाकर अपना सौदा चलाने वाला (कारोबार करने वाला)

तो मेरे भाईयो कस्बे हलाल के लिए एक अच्छा ज़रिया है लेकिन ईमानदारी और सच्चाई लाज़िम है वरना यह भी अज़ाब बन जाता है। अब ज़रा उसके दूसरे रुख़ को मुलाहिज़ा फ़रमाएं के जिस तरह हलाल रोज़ी हासिल करना फ़र्ज़ है उसी तरह हराम माल से बचना भी ज़रूरी है। चुनान्चे ईमान वालों के लिए क़ुरआने मजीद में यूं इरशाद हुआ है के,

يآ ایھا الذین آمنوا لاتاکلوا اموالکم بینکم بالباطل

यानी ख़यानत, चोरी, सूद या रिश्वत के ज़रिए से किसी का माल खाने वाले पर हुज़ूर ﷺ ने लानत फ़रमायी है।

मिश्कात शरीफ़ में रिवायत है के

عن عبداللہ بن عمر قال لعن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الراشی والمرتشی

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदि अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने रिश्वत लेने वाले और रिश्वत देने वाले पर लानत फ़रमायी है।

माले हराम में उजरते ज़िना , उजरते तस्वीर कश, माले यतीम, झूठी क़सम की उजरत, और कम नापतोल से हासिलशुदा फ़ायदा भी शामिल हैं।

और पीछे आपने मुलाहिज़ा किया के कम तोलने वालों के लिए ख़राबी है अल्लाह तआला ने किस क़दर नाराज़गी का इज़हार किया।

लिहाज़ा कम तोलने वालों का अंजाम बहुत बुरा है क़ुरआने मुक़द्दस में मदयन शहर वालों का क़िस्सा कम तोलने वालों के लिए बाइसे इबरत है।

इसी तरह हज़रत मालिक बिन दीनार की एक हिकायत है के आप एक दिन एक बीमार की बीमार पुरसी के लिए तशरीफ़ ले गए जो क़रीबुल मर्ग था तो आपने उसे कलमा पढ़ने की तल्क़ीन की मगर बड़ी कोशिश के बावुजूद कल्मा पढ़ने के बजाय दस ग्यारह , दस ग्यारह ही गिनता रहा जब उससे इसकी वजह पूछी गई तो उसने कहा मेरे सामने एक आग का पहाड़ है जब मैं कल्मा पढ़ने

की कोशिश करता हूं तो यह आग मुझे जलाने को लपकती है तो आप ने पूछा के तुम दुनिया में क्या करते थे उसने कहा मैं कारोबार में कम तोला करता था

(تذکرۃ الاولیاء صفحہ نمبر 957)

मुलाहिज़ा फ़रमाया आप ने के माले हराम का किस क़दर अज़ाब है लेकिन अफ़सोस है उन पर जो इस बात को नहीं समझते और हराम पेशों की कमाई खाते हैं। जायज़ और नाजायज़ में तमीज़ नहीं करते उन्हें पेशों की कमाई से कपड़े बना कर नमाज़ अदा करते हैं और बाज़ उन्हीं पैसों को ज़रिये सदक़ा व खैरात भी करते हैं लेकिन उनको यह जान लेना चाहिए के महज़ उनका यह गुमान है के वह इस का सवाब पाते होंगे उनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा। अल्लाह तबारक व तआला हम सब को नबी करीम ﷺ की सुन्नत तिजारत को अपनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इस्लामी उसूल के मुताबिक़ तिजारत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

،آمین ثم آمین، وآخر دعوانا ان الحمدللہ رب العالمین،

ख़्वातीन और इल्मे दीन

दुख़्तरे मिल्लत जनाब ग़ज़ल साहिबा

आज का दौर फ़ितनों का दौर है जहां सोशल मीडिया , फ़ैशन और आज़ादी के नाम पर हर तरफ़ कुफ़्रो शिर्क और जिहालत तेज़ी से बढ़ती जा रही है , छोटा-बड़ा, मर्द-औरत सब के सब इस का शिकार बनते जा रहे हैं जिन में गुमराही आम सी बात है मगर यह मक़ाम औरतों के लिए ज़्यादा बाइसे फ़िक्र है क्योंकि औरतों को नाक़िसाते अक़्ल और नाक़िसाते दीन कहा गया है।

औरतों में अक़्ल दो क़िस्म की होती है

1) शरई अक़्ल 2) उरफ़ी अक़्ल

औरतों में अक़्ले उरफ़ी बहुत आला दर्जे की होती है मगर अक़्ले शरई मर्दों की ब-निस्बत कम होती है।

ऐसे में भला ख़्वातीन को सब से ज़्यादा ज़रूरत इल्मे दीन को सीखने की है। इस्लाम ने उनकी ज़रूरियात का ख़ूब ख़्याल रखा यहां तक मर्दो ज़न के दरमियान के इम्तियाज़ को भी पसंद नहीं फ़रमाया।

طلب العلم فریضة علی کل مسلمین و مسلمات۔

यानी इल्मे दीन का हासिल करना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है।

प्यारे आक़ा ﷺ ने औरतों की तालीम व तरबियत में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और न ये के सिर्फ़ उनसे मर्दों की तरह बैअत की बल्कि उनके लिए इल्म की मख़्सूस मजालिस भी क़ायम कीं चुनान्चे सही बुख़ारी किताबुल उलूम में मज़कूर है कि जब औरतों ने दरख़्वास्त की के हमारे लिए ख़ास दिन मुकर्रर फ़रमाया जाए तो हुज़ूर नबी करीम ﷺ ने दरख़्वास्त मंज़ूर की और उनके वाज़ व इरशादात के लिए एक ख़ास दिन मुकर्रर हो गया।

आप ﷺ ने औरतों के लिए यह इजाज़त भी दे रखी थी के वो दीनी मसायल से मुतअल्लिक़ मालूमात हासिल करने के लिए घर से बाहर निकल सकती हैं।

ख़्वातीन को इल्मे दीन की फ़ज़ीलत और अहमियत मालूम करने के बाद हमें यह मालूम करना ज़रूरी है कि कितना इल्म हासिल करना ज़रूरी है। इतना इल्मे दीन हासिल करना फ़र्ज़ है जिसके न होने से बुनियादी ईमान में ख़लल या नुक़्स आता हो। जिस के बग़ैर अल्लाह तआला की फ़रमाबरदारी के तक़ाज़े पूरे नहीं होते और न आख़िरत में निजात हासिल हो सकती है।

हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह तआला अलैह इहया अल उलूम में फ़रमाते हैं जिसका खुलासा यूं है के बन्दे को जिन मुआमलात की ज़रूरत पड़ती है उन मुआमलात के बारे में इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है।

इस्लाम में जिन बातों का इल्म हासिल करना फ़र्ज़ कहा गया है इनमें तीन बातें हैं:

अक़ायद का इल्म, आमाल का इल्म और मुहलिकात से बचने का इल्म

अक़ायद यानी अल्लाह और उसके रसूल की बताई गई बातों पर ईमान लाना जो के बेहद ज़रूरी है,

इस तरह आमाल का इल्म यानी के नमाज़ फ़र्ज़ हो जाने पर नमाज़ की अदायगी का इल्म, साहिबे निसाब होने पर ज़कात का इल्म, बात करने के लिए सच्चाई का इल्म , काम करने वालों के लिए हराम व हलाल का इल्म , मुश्किल में सब्र व शुक्र का इल्म , रिश्तेदारों के साथ हुक़ूक़ की अदायगी का इल्म यानी के मुसलमान जितने आमाल से वाबस्ता है हर उन मुआमलात का इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है न हासिल करने वाला गुनहगार होगा।

इस तरह ज़ाहिर और बातिनी आमाल को बरबाद करने वाले मुहलिक़ात का इल्म हासिल करना झूठ , तकब्बुर,ग़ीबत और दूसरे हराम काम से बचने का इल्म।

और अगर इन मुआमलात में कहीं शक व शुबहात और दिल में कोई ख़दशा पैदा हो जाए तो उस बात को दूर करने के लिए दलील का इल्म हासिल करना ज़रूरी है ताकि वो बातिल बात दिल से निकल जाए। ख़्वातीन को इन तमाम बातों का सही इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है।

इल्मे दीन हासिल करने के बारे में यह बात भी बहुत अहम है के यह इल्मे दीन किन से हासिल किया जा रहा है।

इल्मे दीन को आलिमे दीन से हासिल करना ज़रूरी है और न मिलने पर ढूंढना फ़र्ज़ हो जाता है। या शरियत का सही इल्म रखने वालों से इल्मे दीन हासिल करें। या उल्मा की किताबों को पढ़ कर भी इल्मे दीन हासिल किया जा सकता है।

ढूंढने पर आलिमे दीन ज़रूर मिलेंगे इस मुआमले में हमें हज़रत सलमान फ़ारसी रदि अल्लाहु तआला अन्हु की सीरत की तरफ़ निगाह करना ज़रूरी है क्योंकि वह हक़ पर क़ायम रहे और उल्माए दीन की तलाश करते रहे। कई मुल्कों का सफ़र किया और उल्मा की सोहबत में रहे और आख़िरकार नबी के दौर को पा लिया और हुज़ूरे अकरम ﷺ से इस्लाम की दावत पाई और इस्लाम ले आए।

दीन का इल्म न रखने वालों से इल्मे दीन हासिल करना हलाकत है क्योंकि वह बग़ैर इल्म के फ़तवा देते हैं, वह ख़ुद गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह कर देंगे।

ख़्वातीन को इल्मे दीन की तलाश और जुस्तजू हमेशा करनी चाहिए और अगर उल्मा से सीखना नामुमकिन हो इस सूरत में सही उल्मा की किताबों को पढ़

कर भी इल्मे दीन हासिल किया जा सकता है। ख़्वातीन में किताबों को पढ़ने का शौक़ होना भी बहुत ज़रूरी है।

ख़्वातीन को चाहिए कि इल्मे दीन हासिल करने का शौक़ पैदा करें इस बात के लिए हमें सहाबियात के उस सुनहरे दौर पर नज़र करने की ज़रूरत है जहां सहाबियात की एक बड़ी जमाअत में अहादीस की रिवायत में और कारहाए नुमायां अन्जाम दिए जो क़ाबिले तारीफ़ है।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह तआला अलेह ने अस्मा उर रिजाल पर अपनी शोहरा आफ़ाक़ तस्नीफ़ अल इसाबा में 1552 ऐसी सहाबियात की सवानेह हयात बयान की है जिन्होंने नबी करीम ﷺ से हदीस सुनी और उन्हें रिवायत किया और उनके हालात को लिखने के बाद ज़िक्र किया के यह सब की सब ख़्वातीन फ़क़ीहा और आलिमात थी। जिन्होंने न सिर्फ़ रिवायत बल्कि तफ़सीर भी बयान की यहां तक के दीनी इल्म का निस्फ़ हिस्सा ख़्वातीन ही की ख़िदमात है।

इन ख़्वातीने इस्लाम ने सिर्फ़ इल्मे दीन हासिल करने में ही नुमायां किरदार अदा नहीं किया बल्कि इस्लाम की हर तालीम को दिल से अपनाया और अपनी जान व माल और औलाद से बढ़कर दीन की हर बात पर जानिसारी दिखाईं, वह सब्रो शुक्र के मैदान हों इबादत व रियाज़त और अमल की बात हो इश्क़ ए रसूल ﷺ हो या घर के काम काज , हुक़ूक़ की अदायगी हो , या माल व दौलत ख़र्च करना हो या मैदाने जिहाद तक में अपनी बहादुरी से दुश्मनों के छक्के छुड़ाने हों और इसकी मशक्कत, अज़ियतें बर्दाश्त कीं और अपनी जानों को तक दीन की राह में क़ुर्बान कर दिया उनमें हर ख़ातून दीनी , इल्मी और अमली हर ऐतबार से एक ख़ास मक़ाम रखती है।

रसूल अल्लाह ﷺ के दौर में जिन बाकमाल औरतों का तज़किरह मिलता है उनमें हज़रत ख़दीजतुल कुबरा भी नुमायां हैं, उन्होंने दीन के लिए जो कुर्बानियां दीं वो एक मिसाल है। रसूल अल्लाह ﷺ की ख़िदमत में अपना सारा का सारा

माल ख़र्च कर दिया। और जब आप को कुफ़्फ़ार की अज़ीयत भरी बातें सुनने को मिलती तो तसल्ली दिया करतीं थीं और रसूल अल्लाह ﷺ के साथ शेबे अबू तालिब जैसी घाटी में भूख प्यास की अज़ीयतें बर्दाश्त कीं।

हमारी औरतों को चाहिए के वह इन क़ाबिले रश्क ख़्वातीन की सीरत इख़्तियार करें और अपने अन्दर दीन का जज़्बा पैदा करें। यह तभी मुमकिन हो सकेगा जब इल्म की रोशनी सीने को मुनव्वर करेगी वरना जिहालत के अंधेरे में रहकर इन्सान ख़ुद का दुश्मन बन जाता है फिर वह किस हद तक किसी और के लिए मुफीद साबित हो सकेगा।

इल्मे दीन की बरकत से एक औरत अपने घर को एक ऐसा घर बना सकती है जो छोटा हो कर भी अपने अन्दर वुसअत रखता हो, जहां सिर्फ़ अपनी फ़िक्र नहीं बल्कि दूसरों के लिए जीने की फ़िक्र आम होती हो , जहां से दीने हक़ की ख़िदमत के लिए लोग निकलते हों। अगर एक औरत जो इल्मे दीन रखती हो , सब्र और शुक्र करना जानती हो , वह इनके ज़रिए से अपने शौहर को घर से मज़बूत करे तो बाहर वो दुनिया में मज़बूत नज़र आएगा और कई कारनामे अंजाम दे देगा। औरतों को बहुत ज़्यादा ज़रूरत है के इल्मे दीन हासिल करें और यह न समझें के दो चार किताबें या कुछ तक़रीरों से ही इल्म का सफ़र मुकम्मल हो चुका है बल्कि आप को काफ़ी कुछ जानना है , बहुत कुछ ऐसा है जो आपने नहीं जाना। यह सफ़र जारी रखें ,इसी सफ़र में वो सब मिलेगा जिसे आप कहीं और तलाश करते हैं। कामयाबी इसी सफ़र में है। यह इल्मे दीन की राह है जिस पर चल कर लोग कमयाबी को पहुंचे , जिन्होंने इस राह को दुनिया के लिए तरक किया वो हलाकत से जा मिले और दुनिया और आख़िरत दोनों जगह की रुस्वाई उनका मुकद्दर बन गई। इल्म पर ख़ास तवज्जो दें , अल्लाह तआला हमें इल्मे नाफ़ेअ अता फ़रमाए।